वर्ष 8, अंक 07 इलाहाबाद अप्रैल 2009

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

विश्वस्नेहसमाज

(एक क्रांति)

कीमत 5 रुपये

राष्ट्र स्तरीय ६वॉ साहित्य मेला अपार सफलता के साथ सम्पन्न

रचनाएं आमंत्रित है

निबंध संग्रह

इसमें आरक्षण/भ्रष्ट्राचार/दहेज/जातिवाद/नारी शोषण/ राजनीति से संबंधित आलेख/व्यंग्य रचनाएं/संस्मरण आमंत्रित है. इस बात विशेष ध्यान रक्खें कि रचनाएं १५०० शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा २५०/-रुपये अथवा दो रचनाएं ५००/- रुपये सहयोग राशि के साथ

अंतिम तिथि : १५ जून २००६

आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. 538702010009259 में सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है.

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें:

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेल: sahityaseva@rediffmail.com

पत्रिका के आगामी विशेषांक

- विन्ध्य विशेषांक(नवं०६)
- पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक (जून०६)
- बाल्य कवि विशेषांक(अक्टूबर०६)
- महिला रचनाकार विशेषांक
- अहिन्दी भाषी रचनाकार विशेषांक(अक्टू१०)
- युवा रचनाकार विशेषांक (जनवरी१०)
- अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सेवक विशेषांक (मई १०)

उपरोक्त सभी विशेषांको हेतु संबंधित आलेख/कहॉनियॉ/कविताएं/शुभकामना संदेश/विज्ञापन आमंत्रित है.

विज्ञापन दर निम्नवत है:

पृष्ठ	दर प्रति सेमी. (स्वेत/श्याम)	दर प्रति सेमी. (रंगीन)
अंतिम आवरण पृष्ठ	७०००.००	१००००.००
द्वितीय आवरण	५०००.००	७०००.००
तृतीय आवरण	४०००.००	६०००.००
सामान्य पृष्ठ	३०००.००	४५००.००
शुभकामना संदेश	२५०.००	४००.००
सचित्र जीवन परिचय	५००.००	१०००.००

आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:सीए *538702010009259* में संपादक, विश्व स्नेह समाज के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सपादक, विश्व स्नेह समाज, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए जबाबी लिफाफे के साथ लिखें या ईमेल करें: sahityaseva@rediffmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्ष:८ अंक:४जनवरी ०६, इलाहाबाद

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्य:
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया

सम्पादकीय कार्यालय:

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसी: 09335155949
ई–मेल:vsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचना:

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रति: रु०५/–
वार्षिक: रु० ६०/–
विशिष्ठ सदस्य:रु० १००/–
द्विवार्षिकसदस्य:रु०११०/–
पाच वर्ष–रु०२७०/–
आजीवन सदस्य: रु०११००/–
संरक्षक सदस्य :रु० २५००/–

अंदर के पन्नों में:

राष्ट्र स्तरीय ६वॉ साहित्य मेला अपार सफलता के साथ सम्पन ०६

व्यंग्य : छेड़ने की कला ०४

बाल्य काव्य प्रतियोगिता १०

परिचर्चा: वर्तमान परिवेश में साहित्यकारों की भूमिका– 15

दक्षिण भारत में हिन्दी के बढ़ते चरण– 21

प्रेरक प्रसंग – ०६
स्वर्ग विभा द्वारा डॉ० तारा सिंह सम्मान सम्पन्न ११
आतंकवाद – १३
व्यक्तित्व – २३
कहानी:दिल्ली भुल भुलैया २६
खेल की दुनिया: कबड्डी का इतिहास ३०
स्नेहबाल मंच– २४
कविताएं– २५, २६,२६
साहित्य समाचार– २८,३२
स्वास्थ्य– २६
चिट्ठी आई है– ३१
लघु कथाएं– २२,३२
पुस्तक समीक्षा– ३३

अपनी बात

छेड़ने की कला

किसी को छेड़ना हमने विरासत में पाया है. द्वापर कृष्ण भगवान ने गोपियों को छेड़ा, उनकी मटकी फोड़ी, नदियों में नहाते समय कपड़े गायब किए. तुलसीदास ने छत से कुदकर रत्ना को छेड़ा. भाई अपनी बहनो को, बहने अपनी छोटी बहनो-भाइयों को, देवर भाभियों को, जीजा अपने साले-सालियों और सरहजों का, भाभियां देवरों को छेड़ती है. इनके छेड़ने के भी अपने ही मजे है. होली में तो छेड़ने के दायरे बहुत लम्बे हो जाते है. ए सब छेड़छाड़ सामाजिक दायरे में माने जाते है. शोधोपरान्त इसका भी दायरा बढ गया है. जैसे सड़क पर पागलों को, गांवो में कम बुद्धि वालों को, सड़क पर जानवरों का. धीरे धीरे यह दायरा सड़क चलते लड़कियों को छेड़ने पर आ गया. पहले गली से, पड़ोसी से शुरु हुआ ये सफर चौराहों, स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों तक आ गया. हद तो तब हो गई जब २१वीं सदी के लड़के अपनी उम्र के दो गुने, तीन गुने महिलाओं यहॉ तक कि दादियों की उम्र की महिलाओं को छेड़ने से बाज नहीं आते. छेड़छाड़ कई तरह की होती है. सीटी बजाकर, कमेंट कसकर, लड़कियों का पीछा कर, बस में बहाने से हाथ छूकर, मेले में, भीड़ में धक्के देना, कभी साड़ी का पल्लू खींचकर, कभी दुपट्टों को खींचकर, जलती हुई सिगरेट फेंककर, टमाटर फेंककर इत्यादि. ऐसा नहीं है कि छेड़छाड़ में केवल नवयुवक ही आगे है, प्रौढ़ और वयोवृद्ध भी इसमें अपनी सहभागिता निभाने लगे है.

कभी-कभी यह छेड़छाड़ अच्छी तो अक्सर बूरी साबित हो जाती है. जैसे तुलसीदासजी ने रत्ना को छेड़ा तो महाकवि तुलसीदास बन गए, लड़के छेड़ते है तो सस्ते-मंहगे सैडिलों की सौगात मिल जाती है, तो कभी थप्पडों की. कभी-कभी तो लात-घूसो की भी भरमार हो जाती है तो कभी सर मुड़वाने व गदहों की हंसीन सवारी भी नसीब हो जाती है.

ऐसा नहीं है कि इस मामले में केवल लड़के ही आगे है, लड़कियां तो दो कदम आगे ही है. पश्चिमी सभ्यता की नकल में, अटपटे कपड़े पहनकर बाहर निकलना, तंग जींस, चिपकी शर्ट, मिनी स्कर्ट, टॉपलेस, बिना दुपट्टा के सलवार कुर्ता, पैंट-शर्ट पहनने वाली युवतियां तो अक्सर छेड़ छाड़ करती है. जब आग में घी डालोगे तो आग भड़केगी ही. लड़किया कहती है 'लड़के अपनी ओझी मानसिकता के कारण छेड़छाड़ करते है. लड़कियों के घर वाले ऐसे कपड़ों को जिसमें दिन तो दिन रात में भी प्रकाश पड़ने पर अन्तः वस्त्र दिखाई पड़ते है, को पहनाने में अपने आपको एडवांस और सभ्य समझते है. अगर कोई लड़की सलीके से कपड़े पहनती है तो अशिक्षित, असभ्य व पिछड़ी कहलाती है. अगर ये लड़कियां सम्पूर्ण कपड़े पहनेगी, सलीके के कपड़े पहनेगी तो अपने रंग, शारीरिक सौदर्य, अपने एडवांस होने का प्रदर्शन कैसे करेगी. मनचलों को मन कैसे बहलाएगी, अपने ऊपर आहे कैसे भरवाएगी, इन पोशाकों का डिजाइन करने वाले, बनाने वाली कंपनियों, दुकानदारो का फायदा कैसे करवाएगी. एक तो वैसे भी लड़कियो के कपडो बनाने वाली कंपनियां मंहगाई के जमाने में कपड़ो का अवमूल्यन पहले ही कर चूंकी है. कपड़े इतने पतले होते है कि अगर रास्तें में बरसात हो जाए मत पूछिए. क्या बचता है दिखाने को. **आजकल की लड़कियों के अजब है, रंग दंग दस्तूर, जिसके तन पर वस्त्र कम, बनती वही हुजूर.** लड़किया तो लड़किया, साठोत्तरी महिलाएं भी पश्चिमी सभ्यता व फैशन में इतना रम गयी है कि मत पूछो. कमर के ऊपर कपड़ा तो केवल कहने को होता है. ऐसे-ऐसे ड्रेस अल्ला रहम करें. अपनी उम्र को छुपाने के लिए रोज ब्यूटी पार्लर, बाब कट और कौन-कौन से कट बाल, कटवाती है. तो ऐसे में उनके लड़के, पोते के उम्र के मनचले उनको छेड़ते है तो क्या बुराई है.

पचपन की महिलाएं, दिखती है पच्चीस, मेकअप तुझे प्रणाम है, तू इस युग का जगदीश।

आज दिन प्रतिदिन छेड़छाड़/बलात्कार की घटनाओं में इजाफा हो रहा है. समाचार पत्रों, चैनलों में ऐसी घटनाओं को देखकर कहते है-'देश में क्या हो रहा है, क्या जमाना आ गया है.' अरे मानसिकता को छोड़ो, एक सम्पूर्ण सलीके के कपड़े में लड़की, साड़ी में लिपटी नारी में जो सौदर्य दिखता वह क्या इनमें.... अरे दिखाना ही है तो अपना हूनर दिखाओ, शरीर नहीं. अगर लड़किया सलीके के कपड़े पहनने चालू कर दे तो छेड़छाड़ की घटनाओ में ७५ प्रतिशत कम हो जाएगी. लड़को को भी मेरी सलाह है कि अगर छेड़छाड़ करनी है तो ऐसी करोकि अच्छी लगे. ऐसे छेड़ों की न खुद की बदनामी हो न लड़कियों की. अगर लड़कियों को पटाना ही चाहते हो तो अपने हूनर से पटाओ. एक से एक सुंदर लड़किया तुम्हारे आगे-पीछे घुमेगी, नाचेगी. छेड़छाड़ में जोर जबरदस्ती और सार्वजनिकता आ जाती है तो अच्छी नहीं होती. अगर छेड़ना ही है तो ऐसे छेड़ों जो देखने/सुनने वालो को भी अच्छी लगे. खुद को समाज, देश, घर वालो की नजर में गिरकर मत छेड़ों. ऐसा काम करने से क्या फायदा जो मुँह दिखाने के काबिल न छोड़े. कोई गदहे पर बैठाकर, मुँह में कालिख पोतकर तुम्हें छेड़े.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रेरक प्रसंग

स्वस्थ जीवन जीने की कला

परमात्मा अनन्त है, मनुष्य परमात्मा का अंश है. परमात्मा के अनन्त गुण, असीम शक्ति, मौलिक ज्ञान, स्थिर शान्ति, आनन्द, प्रेम, सौन्दर्य, माधुर्य, कोमलता, उत्साह, निर्भीकता आदि मनुष्य में छिपे पड़े है, इनको जागृत करना, अपने भीतर महसूस करना तथा अपने जीवन में जीना प्रत्येक मनुष्य का धर्म एवं प्रथम कर्त्तव्य है. जब तक मनुष्य परमात्मा से युक्त होकर, अहंकार तथा स्वार्थ से मुक्त होकर परमात्मा के लिए अपना जीवन नहीं जीता, तब तक सभी भौतिक सुविधाओं तथा उपलब्धियों के होते हुए भी उसके जीवन में अधूरापन होगा तथा जीवन का सारांश दुख एवम् निराशा होगा, जीवन एक बोझ मात्र होगा.

परमात्मा से युक्त होकर जीवन जीने से टेंशन, चिंता, दुख, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष आदि पूरी तरह समाप्त हो जायेगें तथा मनुष्य को धीरे-धीरे बीमारी बूढ़ापे पर नियन्त्रण करने की कला आ जायेगी. शरीर सदा स्वस्थ तथा युवा एवम् देदीप्यमान होगा. अन्ततः एक ऐसी स्थिति प्राप्त की जा सकती है कि मनुष्य अपनी इच्छानुसार दीर्घ एवम् स्वस्थ जीवन जीने में सक्षम होगा.

श्री कृष्ण गोयल, दिल्ली

सूर्य की तरह पुरुषार्थी बनों

सूर्य कितना पुरुषार्थी है, निरंतर पुरुषार्थ करता रहता है. हे मानव, तू सूर्य की नाई बन. फरियाद मत कर, पुरुषार्थ कर. निराश मत हो, आशावादी बन, उत्साही बन, तो दुःख के बादल बिखर जायेंगें. तु विघ्न-बाधाओं के सिर पर पैर रखकर आगे बढ़ता चला जा, तो सफलता तेरी दासी हो जायेगी.

डॉ. बी.एल.टेकड़ीवाल,कांडीवली पश्चिम, मुंबई-४००१०१

सिद्धातों के शव लिये, बीत चली सब आयु।
सुमन न फूलेंगे यहाॅ, है विषाक्त जलवायु।।
लाभ, हानि का कर रही, मुसकानें व्यापार।
रे पागल मन! तू कहाॅ, खोज रहा है प्यार।।
कोयल निर्वासित हुई, कागा गाये गीत।
हुआ पुरस्कृत चतुर्दिक, गर्दभ का संगीत।।
कहाॅ सुवसना, संस्कृता-नारि, कहाॅ स्वच्छन्द।
कहाॅ पद्य अतुकान्त है, कहाॅ भाव मय छन्द।।
धूप ज्येष्ठ-मध्याहन की, है निकालती बैर।
हाथ जोड़ छाया खड़ी, सिकुड़ी, माॅगे खैर।।
करें परीक्षा प्रेम की, चलो स्नेह जल सींच।
मम मुख तू अॅगुली करें, मैं तब आॅखों बीच।।
विघ्न पत्र से टूटते, देते राह पहाड़।
पुरुष-सिंह की गूॅजती, जिस पल यहाॅ दहाड़।।
पुरुषार्थी का आत्म-बल, तम क्षय करे प्रकाश।
वह चाहे तो बाॅध ले, मुट्ठी में आकाश।
स्वार्थ हेतु वे श्वान के, भी लेंगे पग चाट।
और उन्हीं को बाद में, छल से देंगे काट।।
स्नेहमयी सहधर्मिणी, आशा रत सन्तान।
हो सुचारु आजीविका, वह घर स्वर्ग समान।
आओ, कर सच को ग्रहण, पालें सत्यादर्श।
होगा तभी महान फिर अपना भारत वर्ष।
मन्दिर, मस्जिद में कहाॅ, है ईश्वर का वास।
हर निर्मल मन में मिला, उसका दिव्य प्रकाश।
ईश्वर को संसार में, जीव मात्र से प्यार।
करुणा, दया, उदारता, है उसके उपहार।।

मुन्नेबाबू दीक्षित 'शशांक',पीलीभीत, उ.प्र.

शुभ कामना संदेश

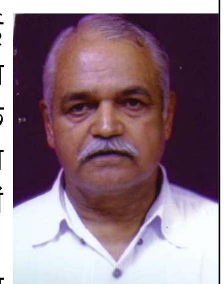

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' अपना सौवां अंक निकालने जा रही है. जिसका विमोचन १४-१५ फरवरी २००६ को छठवें साहित्य मेले में किया जाएगा.

उक्त अवसर पर समुपस्थित समस्त विद्वानों का मैं स्वागत करते हुए उपरोक्त सारे आयोजनों की सफलता की कामना करने के अतिरिक्त समारोह में सम्मानित/पुरस्कृत सभी विद्वानों को अपना हार्दिक बधाई देता हूँ।

डॉ० वंशीधर दाश

(महाकवि, साहित्य रत्नाकर, आचार्य, शताब्दी रत्न)
महादेवपाड़ा, सुन्दरगढ़, ओड़िशा, ७७०००१
दूरभाषः ०६६२२२७३८८३

आयोजन

राष्ट्र स्तरीय ६वाँ साहित्य मेला अपार सफलता के साथ सम्पन्न

- नयी पीढ़ी को हिन्दी के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए बाल्य काव्य प्रतियोगिता का आयोजन
- हिन्दी विषय में सर्वोच्च अंक पाने वाले अर्पित कुमार को हिन्दी उदय सम्मान
- अपने आपमें एक अनोखा कार्यक्रम है यह

राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त, साहित्यिकारों के ललक व जिज्ञासा का केन्द्र बिन्दु, साहित्य जगत का प्रतिष्ठित आयोजन छठवॉ साहित्य मेला अपार सफलता के साथ सम्पन्न हो गया. दो दिवसीय इस आयोजन में देश के कोने-कोने से आये साहित्यकारों ने अपनी सहभागिता निभायी.

<u>१४ फरवरी २००६</u>

प्रथम दिन पुस्तक प्रर्दशनी का उद्घाटन डॉ० तेज नारायण कुशवाहा, कुलपति, विक्रमशीला विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार एवं सुश्री बी.एस. शांताबाई, प्रधान सचिव, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के कर कमलों द्वारा किया गया. पुस्तक प्रर्दशनी में करीब सात सौ पत्र-पत्रिकाएं और करीब दो हजार किताबें देश के कोने-कोने के लेखकों की रक्खी गयी थी. जो स्थानीय और बाहर से आये साहित्यकारों, पत्रकारों द्वारा काफी सराही गयी. साहित्यकारों ने इसे अपने आप आपमें एक अनोखी पुस्तक प्रर्दशनी बताया. यह पुस्तक प्रर्दशनी १४/१५ फरवरी २००६ की सायं ५ बजे तक लगी रही. जिसमें आमजन ने भी सहभागिता निभायी और क्रय किया.

१४ फरवरी की सायं ४ बजे अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. जिसमें बलिया से पधारे डी.पी. उपाध्याय ने देश भक्ति की रचना को सुनाया-मुह मोड़ देते कलम का जब मन में हम ठानते, पर पंचशील की नीति को गौरव सदा हम मानते।। विनम्र है निर्बल नहीं ऐ पाक तू यह जान ले। बहु-बार मुँह की खाई है, लोहा हमारा मान ले।।

भागलपुर बिहार से पधारे गेणश प्रसाद महतो ने कहा-सत्कर्मो में प्रेरित कर तुम, स्वार्थ-लोभ से हमें बचाओ।
अज्ञानी को मार्ग दिखाकर, सन्मार्गो पर सदा बढ़ाओ।।

अम्बेडकर नगर, उ.प्र. से पधारे अशोक कुमार गुप्त ने कहा-आया बसंत आया बसंत, सबके मन को भाया सबंत,बहती मदमस्त हवायें
तन-मन को पुलकित कर जाये।
कर दे आत्म विभोर सभी को, सबको हर्षाया वसंत।।

दुर्ग, छत्तीसगढ़ से पधारे दक्षिण भारतीय हिन्दी कवि आर.मुत्थुस्वामी ने कहा-'तीनों रंगों से मेरा सम्मान बढ़ा,तीनों रंगो के अपमान से मेरा सम्मान घटा। सुनी जगह-जगह बम ब्लास्ट बढ़ा, तब से मेरा पारा भी चढ़ा

इंदौर, म.प्र. से पधारे नन्दलाल भारती ने कहा- दरिद्र नारायण,
देखो आदमी बदल रहा है

हमीरपुर, उ.प्र. से पधारे डॉ. देवीदीन अविनाशी ने कहा-जले हजारों दीप दीप में तेल जले बाती।पले हजारों बीच बीच में याद नहीं आती।।

कोरबा, छ.ग. से पधारे रवीन्द्र सरकार ने कहा-जिस देश में बार बालॉए है, बेहाल सरकार है।
उस देश में भला भुटबाल की भला दरकार है।
जिस देश में गरीब है, दलित है, बेरोजगार है।
उस देश में भला फुटबाल की क्या दरकार है।।

पिथौरागढ़, उत्तराखंड के नवीन विश्वकर्मा ने पढ़ा-
अमीरो की बस्ती में परेशान हो गई।
भूख, टूटे छप्पर में मेहमान हो गई।।

ग्वालियर, म.प्र. से पधारे राम सहाय बरैया ने कहा-
देश की एकता और अखण्डता हेतु
सद्भावना के बीज बोएं।
मतभेद के मैल को,
प्रेम के सावन से धोएं।।

बैतूल, म.प्र. से पधारे कचरया गव्हाड़े 'साक्षी' ने कहा-
विश्वास का ये आईना, साहित्यकार है
सच्चाई को बयॉ करता, करलो दीदार है

इनके अतिरिक्त भोपाल, म.प्र. के डॉ० प्रमोद प्रकाश सक्सेना, मुंबई से डॉ० तारा सिंह आदि ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को भाव विभोर किया. इसमें भोपाल के डॉ० प्रमोद सक्सेना को प्रथम स्थान मिला. कवि सम्मेलन का संचालन कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव ने किया. आभार ज्ञापन डॉ० तारा सिंह ने किया.

<u>१५ फरवरी २००६</u>

<u>प्रथम सत्र</u>

१५ फरवरी की प्रातः ६ बजे वर्तमान परिवेश में साहित्यकारों की भूमिका विषयक परिचर्चा का आयोजन किया गया. परिचर्चा में भाग लेते हुए इन्दौर से पधारे नन्दलाल भारती ने कहा-'साहित्यकार तो अपनी भूमिका निभा रहा है! देखना यह है कि क्या सरकार, समाज और पाठक भी अपनी

भूमिका निभा रहे हैं या नहीं. कौशाम्बी के मो० अन्सार शिल्पी ने कहा- 'साहित्यकार का कर्तव्य है कि ऐसे साहित्य का सृजन करें जो समाज कल्याण का भाव रखता हो! सच्चा साहित्यकार त्रिकाल दर्शी होता है.

मुंबई के डॉ० बी०पी०सिंह ने कहा-'साहित्यकारों का एक आचरण होना चाहिये कि साहित्यकारों द्वारा साहित्यकारों को प्रोत्साहन अवश्य दिया जाये. हमारे बीच प्रोत्साहन का अभाव है. इस पर विचार होना चाहिए.'

खंडवा, म.प्र. से पधारे प्रो. डॉ० शरद नारायण खरे ने कहा-

'गम़ जरा खूबसूरत दीजिए,
हम मुहब्बत है मुहब्बत दीजिये।
इन परिदों पर भरोसा कीजिये,
ऊंचा उड़ने का हौसला दीजिये।

++++++++++++++++++++

१५ फरवरी को समापन सत्र में राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' के सौवें अंक सुश्री बी.एस.शांताबाई विशेषांक का विमोचन डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, डॉ० चद्र देव मिश्र, डॉ० रत्नाकर पाण्डेय, सुश्री बी.एस.शांताबाई व कार्यक्रम संयोजक व पत्रिका के संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा संयुक्त रुप से किया गया. विमोचन के बाद संस्थान की अध यक्षा सुश्री विजय लक्ष्मी विभा ने संस्था की प्रगति रिर्पोट पढ़ी और अतिथियों का स्वागत किया.

हिन्दी विषय में हाईस्कूल, इंटर, स्नातक, परास्नातक स्तर पर सर्वाधि क अंक प्राप्त करने वाले को दिया जाने वाला हिन्दी उदय सम्मान, मेघालय के अर्पित कुमार पुत्र श्री हर्षित कुमार को प्रदान किया गया. इस अवसर पर पूर्व चयनित साहित्यकारों का सम्मान व अलंकरण समारोह आयोजित किया गया जिसमें एक मौलिक कहानी पर दिया जाने वाला साहित्य श्री सम्मान, ३१००/-रुपये नगद, बहराइच के ओम प्रकाश अवस्थी को, किसी एक नाटक पर दिया जाने वाला डॉ० रामकुमार वर्मा सम्मान, २०००रुपये नगद बुलंदशहर के अनुराग मिश्र 'गैर', किसी एक बाल रचना पर दिया जाने वाला बालश्री सम्मान ११००रुपये नगद राम सहाय बरैया, ग्वालियर, हिन्दी माध्यम से विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए दिया जाने वाला विज्ञान श्री सम्मान जोधपुर, राजस्थान के डॉ० दुर्गा दत्त ओझा, शिक्षा के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी में योगदान के लिए दिया जाने वाला शिक्षक श्री सम्मान दुर्ग, छ.ग. के श्री आर.मुत्थुस्वामी, सम्पूर्ण साहित्यिक योगदान के लिए दिया जाने वाला विहिसा अलंकरण इंदौर के श्री नंद लाल भारती, छ.ग. के श्री किसान दीवान, अहिन्दी भाषी को ही हिन्दी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए दिया जाने वाला विशिष्ट हिन्दी सेवी सम्मान दुर्ग, छ.ग. के आर.मुत्थुस्वामी, समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाने वाला समाज श्री सम्मान इलाहाबाद की श्रीमती सोशन एलिजाबेथ द्विवेदी, विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए दिया जाने वाला विधि श्री सम्मान नई दिल्ली के पवन चौधरी, उत्कृष्ठ संपादन के लिए दिया जाने वाला संपादक श्री सम्मान नागपुर के पं० नरेन्द्र कुमार, नई दिल्ली के श्री जसवंत सिंह जनमेजय, महासमुद्र, पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी की सेवा करने के लिए दिया जाने वाला पुलिस हिन्दी सेवा पदक भोपाल, म.प्र. उमाशंकर दुबे 'मनमौजी', श्रृंगार रस पर आधारित

बहराइच के ओमप्रकाश अवस्थी को साहित्यश्री सम्मान प्रदान करते हुए डॉ० रत्नाकर पाण्डेय व साथ में अतिथि गण

बुलन्दशहर के अनुराग मिश्र डॉ रामकुमार वर्मा सम्मान ग्रहण करते हुए

जोधपुर, राजस्थान के डॉ० दुर्गा दत्त ओझा विज्ञान श्री सम्मान ग्रहण करते हुए

रचनाओं के लिए दिया जाने वाला डॉ० किशोरी लाल सम्मान छिन्दवाड़ा, म.प्र. के श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा, किसी सरकारी/अर्द्धसरकारी/निगम में राजभाषा के पद पर राजभाषा में उल्लेखनीय योगदान के

इलाहाबाद की श्रीमती सोशन एलिजाबेथ द्विवेदी अपने पति श्री रेवा नन्दन द्विवेदी के साथ समाज श्री सम्मान ग्रहण करते हुए

छत्तीसगढ़ के श्री आर.मुत्थुस्वामी शिक्षक श्री सम्मान ग्रहण करते हुए

इंदौर के श्री नन्दलाल भारती विहिसा अलंकरण-२००६ ग्रहण करते हुए

लिए दिया जाने वाला राजभाषा सम्मान मुंबई के श्री राजीव सारस्वत, अहिन्दी भाषी साहित्यकार को हिन्दी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाने वाला राष्ट्रभाषा सम्मान बेगलूर, कर्नाटक के श्री विष्णु राजाराम देवगिरी, पांडीचेरी की प्रो० वी.विजयलक्ष्मी, मेघालय के अकेला भाई, , रायबरेली, उ.प्र. की श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', बिजनौर के श्री हितेश कुमार शर्मा, नागपुर के पं. नरेन्द्र कुमार, जबलपुर की उमा सोनी को प्रशस्ती पत्र प्रदान किया गया.

साहित्यकारों ने हमेशा मूल्यों की रचना की है. साहित्यकारों द्वारा टूटते समाज, और टूटती पीढ़ी को बचाने का कार्य करना चाहिये.

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि सुश्री बी.एस.शांताबाई ने कहा-'हमें राजकीय लोगों को खुश करने वाला साहित्य नहीं चाहिये. हमें वास्तव में हिन्दी की सेवा करनी चाहिए. यह कार्यक्रम अपने आपमें हिन्दी सेवियों के लिए एक मिसाल है. जहां देश के कोने-कोने से साहित्यकार एकत्र होकर अपने विचारों का आदान प्रदान करते है'

विशिष्ट अतिथि, प्राचार्य, सच्चा बाबा आश्रम संस्कृत महाविद्यालय, इलाहाबाद ने कहा-'आगे बढ़ने के चक्कर में लोग दुःखी हैं. परन्तु वह सुखी है जो साहित्य सृजन करते है. संस्थान के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी का हिन्दी प्रेम सराहनीय है. इनसे अन्य लोगों को प्रेरणा लेनी चाहिए.'

मुख्य अतिथि के पद से बोलते हुए पूर्व सांसद व हिन्दी सेवा के लिए अपने को समर्पित करने वाले डॉ० रत्नाकर पाण्डेय ने कहा-'हिन्दी का गंगा की धारा की तरह वेगशील प्रवाह है जो अपना मार्ग स्वतः तय करती है. श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के संयोजकत्व में आयोजित यह गरिमामय कार्यक्रम साहित्य मेला हिन्दी की धारा को नई दिशा देने के लिए किया जाना सद्प्रयास है. यह प्रयास वास्तव में सराहनीय है. उन्होंने कहा कि मुझे प्रथम बार ऐसा अनोखा कार्यक्रम देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसमें तीन पीढ़ियों की सहभागिता है. बच्चों के द्वारा प्रस्तुत बाल्य काव्य भी सराहनीय रहा. हिन्दी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के लिए छात्रों को सम्मानित करना हिन्दी को बढ़ावा देने लिए अपने आप में अनुकरणीय व सराहनीय प्रयास है. संस्थान के सभी सदस्यों को इसके लिए मैं बधाई देता हूँ.

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ० तेज नारायण कुशवाहा ने कहा-'प्रार्थना ही प्रार्थना नहीं होती, प्रार्थना के साथ-साथ हमें प्रयत्न करना होगा! हमें नीतिपरक साहित्य लिखना होगा जिससे हम समाज को दिशा प्रदान कर सकें. मुझे डॉ० तारा सिंह ने यहॉं कार्यक्रम की अध्यक्षता करने का आग्रह किया था. फिर गोकुलेश्वर द्विवेदी जी ने मुझसे वार्ता की. मेरी तबियत खराब थी फिर भी मैं यहॉं आया. पहले संस्थान से अनजाना था. मैं सोच रहा था कि पता नहीं कैसा कार्यक्रम होगा. लेकिन आयोजन की भव्यता, गरिमा को देख कर मेरा मन आच्छादित हो गया. ऐसे आयोजन को ही वास्तव में हिन्दी की सेवा के लिए किया गया सद्प्रयास कहा जाता है. साधन सीमित है फिर भी आयोजन में सोच में उत्कृष्ठता लिए हुए. ऐसी संस्थाओं को यथासम्भव सहयोग किया जाना चाहिए.

अतिथियों को माल्यार्पण महिला शाखा की कार्यसमिति सदस्य श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, कार्यसमिति सदस्य मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी,

हमारे सम्मानित मुख्य अतिथि डॉ० रत्नाकर पाण्डेय, पूर्व सांसद, राज्यसभा, नई दिल्ली

हमारे सम्मानित अध्यक्ष महोदय डॉ० तेज नारायण कुशवाहा, कुलपति विक्रमशीला विद्यापीठ, भागलुपर, बिहार

हमारे सम्मानित विशिष्ट अतिथि सुश्री बी.एस.शांताबाई, प्रधान सचिव, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेगलौर

हमारे सम्मानित विशिष्ट अतिथि डॉ चंद्र देव मिश्र, प्राचार्य, सच्चा बाबा आश्रम संस्कृत महाविद्यालय, अरैल, इलाहाबाद

युवा शाखा के स्नेहाश्रम सचिव अशोक कुमार गुप्ता, संयुक्त सचिव ईश्वर शरण शुक्ल ने किया.

कार्यक्रम का संचालन कार्यसमिति सदस्य मो.अन्सार शिल्पी, कौशाम्बी ने तथा संस्थान सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने संयुक्त रुप से किया. पुस्तक प्रर्दशनी का कार्यभार युवा शाखा के प्रसार सचिव राजेश कुमार सिंह इलाहाबाद ने संभाला.

इस अवसर पर विज्ञान परिषद, इलाहाबाद के प्रधानमंत्री डॉ० शिवगोपाल मिश्र, डॉ० देव दत्त द्विवेदी, अन्तर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार के सपांदक अरुण कुमार अग्रवाल, सा. सा.संगम कला अकादमी, के सचिव वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश', श्रीमती जया द्विवेदी, राजेश कुमार सिंह, आशुतोष कमाार केसरवानी, सूर्य नारायण शूर, अवनीश कुमार, शहर समता के सपांदक, उमेश श्रीवास्तव, डी.पी.उपाध्याय, सुश्री पुष्पा जैन, वीरेन्द्र कुमार, गौरीशंकर गुप्ता, राजीव कुमार, एस.के.तिवारी, बलराम यादव, हेम चन्द्र श्रीवास्तव,हिमाशु कुमार, आर.के.श्रीवास्तव, रेवा नन्दन द्विवेदी, महेन्द्र कुमार भाष्कर, श्रीमती संगीता भाष्कर, अंकु, अशोक गुप्ता, ईश्वर शरण शुक्ल, विजय लक्ष्मी विभा, जितेन्द्र, विनोद मौर्या, आशीष शुक्ला, मनमोहन कुशवाहा सहित सैकड़ों की संख्या में साहित्यकार, संपादक, पत्रकार, समाज सेवी, आदि उपस्थित थे.

छत्तीसगढ़ के श्री किसान दीवान विहिसा अलंकरण-२००६ ग्रहण करते हुए

ग्वालियर के श्री राम सहाय बरैया बाल श्री सम्मान ग्रहण करते हुए

बाल्य काव्य प्रतियोगिता

कार्यक्रम में बोलते हुए संस्थान की अध्यक्षा सुश्री विजय लक्ष्मी विभा

प्रथम सत्र में ही एक बाल्य काव्य प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया. जिसमें उत्तर प्रदेश के पांच जिलों के बाल्य प्रतिभागियों ने अपनी सहभागिता निभायी. इस प्रतियोगिता में रायबरेली की चित्रांशी श्रीवास्तव ने प्रथम, आशीष कुमार, इलाहाबाद द्वितीय, कुमारी कृति केसरवानी, इलाहाबाद को तृतीय व कुमार सम्भव बलिया को सात्वनां पुरस्कार प्रदान किया गया. यह प्रतियोगिता बच्चों के अभिभावकों, उपस्थित विद्वानों द्वारा काफी सराहा गया. साहित्यकारों ने इसे नयी पीढ़ी में हिन्दी जागरुकता पैदा करने के लिए उठाया गया अनोखा कदम बताया.

सम्मान ग्रहण करते हुए बाल

हिन्दी मासिक वाह क्या बात है के वार्षिकांक का विमोचन करते हुए डॉ.ए.के.गुप्ता, संपादक, डॉ० चन्द्र देव मिश्र, डॉ० तेज नारायण कुशवाहा, डॉ० रत्नाकर पाण्डेय, सुश्री बी.एस.शांताबाई

प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, रायबरेली

मूल्य वृद्धि सूचना

प्रिय सम्मानित पाठको,

१६६६ से त्रैमासिक व २००१ से मासिक रुप में प्रकाशित आपकी चहेती पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' का हम तीसरी बार मूल्य वृद्धि हेतु बाध्य हो रहे है. वर्तमान परिवेश में किसी अव्यवसायिक पत्रिका का निकालना बहुत ही दुरुह कार्य है. हम पत्रिका का मूल्य १०रुपये प्रति अंक अक्टूबर ०६ से कर रहे है. आशा है आपका सहयोग हमें आगे भी मिलता रहेगा.

वार्षिकः १००रुपये, विशिष्ट सदस्यः२००रुपये,
पंचवर्षीय-५००रुपये, आजीवन ११००/-
संरक्षक सदस्यः ३१००/-रुपये.

संपादक

संरक्षक सदस्य का नाम प्रत्येक अंक में संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित किया जाएगा.

हिन्दी उदय सम्मान मेघालय के अर्पित कुमार को

पत्रिका के सौवें अंक का विमोचन करते बाये गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, डॉ0 चंद्र देव मिश्र, डॉ0 तेज नारायण कुशवाहा, डॉ0 रत्नाकर पाण्डेय, सुश्री बी.एस.शांताबाई, मो. अन्सार शिल्पी

हाईस्कूल, इंटर, स्नातक, परास्नातक स्तर पर हिन्दी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को दिया जाने वाला यह सम्मान इस वर्ष केवल एक छात्र को देने की योजना थी. वर्ष २००८ का हिन्दी उदय सम्मान शिलांग, मेघालय के अर्पित शेखर पुत्र श्री हिमाशु प्रसाद व माता श्रीमती अनुराधा प्रसाद को हाईस्कूल में हिन्दी विषय में ६५ प्रतिशत अंक के लिए दिया गया. संस्थान के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने अर्पित शेखर के पिता श्री हिमांशु प्रसाद को शिलांग से सम्मान लेने के उद्देश्य से सशरीर अपने बच्चे के साथ साहित्य मेला-०८ में सहभागिता निभाने पर कोटिशः बधाई दी. उन्होंने श्री हिमांशु कुमार जी को हिन्दी के प्रति गहरी निष्ठा के लिए बधाई दीं. श्री अर्पित कुमार को ५०१/रुपये नगद, सम्मान पत्र, साल ओढ़ाकर अतिथियों ने सम्मानित किया तथा उन्हें विश्व स्नेह समाज पत्रिका , हिन्दी मासिक पत्रिका वाह क्या बात है पॉच वर्ष तक निःशुल्क देने की घोषणा की गई.

डॉ० तेज नारायण कुशवाहा को साहित्य गौरव

फार्म **IV**(देखिए नियम-८)

प्रकाशन का स्थान	- इलाहाबाद
प्रकाशन की अवधि	- मासिक
मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का नाम	- गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	-एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
प्रकाशन	-एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

मैं गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एतद् द्वरा घोषणा करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास से सही हैं.

हस्ताक्षर

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

स्वर्ग विभा द्वारा डॉ० तारा सिंह सम्मान सम्पन्न

१५ फरवरी २००६ को छठवें साहित्य मेला के अवसर पर स्वर्ग विभा टीम के द्वारा इलाहाबाद में हिन्दुस्तानी एकेडमी में आयोजित भव्य समारोह में ५ उत्कृष्ठ साहित्यकारों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर स्वर्ग विभा, हिन्दी वेबसाइट, नवी मुम्बई के अध्यक्ष डॉ. बी.पी.सिंह ने बताया कि तारा सम्मान २००८ योजना के अन्तर्गत कुल ६६ प्रविष्ट्रियों में से पॉच साहित्यकारों को उनके उत्कृष्ट साहित्यिक अवदान एवं उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए चयन किया गया. यद्यपि चयन का कार्य काफी कठिन था, सभी प्रविष्ट्रियॉ उत्कृष्ट साहित्यकारों की थी, लेकिन निर्णायंक मंडल ने डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, इलाहाबाद, डॉ० हर्ष कुमार 'हर्ष', पटियाला, डॉ० वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' परियॉवा, प्रतापगढ़, डॉ० शरद नारायण खरे, मण्डला, म.प्र. और डॉ० प्रमोद प्रकाश सक्सेना 'पुष्कर', भोपाल, म. प्र. को चयनित किया. समोरोह के मुख्यअतिथि डॉ० रत्नाकर पाण्डेय, पूर्व सांसद, नई दिल्ली, सभाध्यक्ष डॉ० तेज नारायण कुशवाहा, कुलपति, विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार, विशिष्ट अतिथि सुश्री बी.एस.शांताबाई, प्रधान सचिव, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेंगलौर, कर्नाटक, डॉ० चन्द्र देव मिश्र, प्राचार्य, सच्चा बाबा आश्रम संस्कृत महाविद्यालय, इलाहाबाद, उ.प्र. के हाथों इन विद्वान मनीषियों को प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह, शॉल, पुस्तकें, पुष्प एवं १५००/-रुपये नगद देकर सम्मानित किया गया.

डॉ० तारा सिंह की पुस्तक का विमोचन करते हुए अतिथि गण

इस अवसर पर पत्रिका के संपादक व विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के सचिव **गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी** ने कहा-'इस सम्मान को प्रारम्भ करने का प्रस्ताव मैंने ही दिया था, और यह मेरा सौभाग्य है कि प्रथम सम्मान मुझे ही मिला. इसके लिए मैं स्वर्ग विभा टीम के अध्यक्ष डॉ. बी.पी.सिंह, महासचिव डॉ० तारा सिंह सहित पूरी टीम को हार्दिक धन्यबाद देता हूॅ. साथ ही यह कामना करता हूॅ कि यह श्रृंखला अनवरत जारी रहेगी और साहित्य जगत में एक अलग मुकाम हासिल करेगी.

मुक्तक

आतंकवाद से मुक्त होगा हमारा देश
पूरा होगा शान्ति का अपना सपना।
जाति-धर्म, छुआ-छूत की दीवारें तोड
मानवता ही राष्ट्र-धर्म बनेगा अपना ।।

दुनिया में जब भी नए धर्म का सूत्रपात हुआ तो उसके मूल में दलित, पिछडों, निर्बल, गरीबों के साथ हुआ अत्याचार ही था. धर्म और सत्ता पर काबिज एंव उससे पोशित व्यक्तियों ऐव संस्थानों द्वारा जब-जब धर्म का व्याख्या अपने अनुकूल की गई तब-तब नए धर्म का सूत्रपात हुआ. ईसाई, मुस्लिम, सिक्ख, जैन, बौद्ध सभी इसी दौर से गुजर कर आगे बढे. वर्णव्यवस्था का वर्तमान रुप भी इसी व्यवस्था की देन है. कालान्तर में मनुस्मषति से पूर्व मात्र कार्य निष्पादन को वर्ण कहा गया और वह परिवर्तनीय था. इसी कारण परषुराम क्षत्रिय होकर थी ब्राह्मण, बाल्मिकी निम्न कुल में रहकर भी ब्राह्मण अर्थात ब्रह्म के ज्ञाता बने. ऐसे अनेकों उदाहरण दष्ष्टव्य हैं जब योग्यता के उत्थान/पतन के कारण वर्ण की उन्नति अथवा अवनति हुई.

उपरोक्त से मेरा आषय है कि यदि हम आतंकवाद से मुकाबला करना चाहते हैं तथा धर्म की पताका को विष्व में फहराना चाहते हैं तो हमें सनातन धर्म के मूल सिद्धान्तों का पालन करना होगा जिसमें सर्वप्रथम सनातन धर्म के अनुयायियों (हिन्दुओं) को विभिन्न पूजा-पद्धति अपनाते हुए भी एक मंच पर आना होगा. मूल मन्त्र मानवता, राश्ट्रप्रेम, गौरक्षा, गंगा एंव समस्त नदियों की पवित्रता को अपनाना होगा. जातिवाद, क्षेत्रवाद के स्थान पर मानवतावाद का प्रचार-प्रसार अपने कार्यों से करना होगा. यदि कोई उच्चकुल में पैदा व्यक्ति अपने विचारों, कार्यों तथा रहन-सहन से गन्दा है तो कोई भी

आतंकवाद

✍ अजय चतुर्वेदी 'कक्का'

उसका सानिध्य नहीं चाहता. इसके विपरीत सन्तों से कोई उनकी जाति नहीं पूछता और न ही निम्न वर्ण में उत्पन्न सन्त को कोई अछूत कहता है. मेरा कहने का आषय मात्र इतना है कि हम समाज में अपने लिए निर्धारित कार्यों को करते हुए मन-कर्म व वचन से अच्छा बनने का प्रयास करें.

आतंकवाद का अर्थ बलात् अपनी बात मनवाना ही तो है. उसके लिए मानवता गौण है। रावण का आतंकवाद, कंस का आतंकवाद, दुर्योधन का आतंकवाद, ईसाइयों का धर्म-परिवर्तन का आतंकवाद, सत्ता प्राप्ति के लिए जाति, धर्म, क्षेत्रवाद, भाशावाद का आतंकवाद अर्थात आतंकवाद के नए-नए चेहरे हमारे सम्मुख हैं. इतिहास एंव हमारे वेद-पुराण, धर्मग्रन्थों से हमें आतंकवाद से निजात पाने का मार्ग भी मिलता है. राम, कष्ष्ण, अर्जुन तथा वर्तमान में भी अनेक महापुरुशों ने **भय बिन होय न प्रीत** के महत्व को समझाया. रावण का कुल सहित वध, कंस की हत्या, कौरवों का सर्वनाष स्पश्ट करता है कि आतंकवाद से कैसे निपटा जाए. आज विश्व का प्रमुख आतंकवादी अमेरिका है जो स्वंय को श्रेष्ठ, ताकतवर एंव विश्व का सिरमौर बनाए रखने के लिए अन्य देशों की सभ्यता ऐव संस्कृति को नष्ट कर ईसाईयत फैलाने का दुष्कर्म कर रहा है. अन्य देशों के प्राकृतिक संसाधनों पर दल-बल एंव धन से कब्जा कर रहा है. अपनी नग्न संस्कृति से दुनिया की सभ्यता एंव संस्कृति को विनष्ट करने पर उतारु है. ताकत, पैसे तथा राजनैतिक चालों से देशों को आपस में लडाकर अपने हथियार बेचता है. पहले हथियार उधार देना, फिर अपना बाजार बनाना, प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा, ज्ञान-विज्ञान का पेटेन्ट कराना, उसकी कार्यप्रणाली है. परिणामतः स्थानीय व्यापार धन्धे ठप्प, लोगों में निराषा और परिणति-आतंकवाद ।

सृष्टि के प्रारम्भ का उल्लेख, उसकी गणना, पतन का काल, ब्रह्माण्ड की सूक्ष्मतम विवेचना, आत्मा का अस्तित्व, ईश्वर की अवधारणा अगर कहीं वर्णित है तो वह सनातन धर्म में है. वेदों और पुराणों में है. हमारे ऋषि-मुनियों ने जाना कि शरीर एंव आत्मा को शुद्ध एंव पुष्ट बनाने के लिए किन-किन औषधियों की आवश्यकता है, ब्रह्माण्ड को सुरक्षित एंव जनापयोगी बनाए रखने के लिए किस प्रकार जल, वायू एंव पर्वतों के संरक्षण एंव पोषण की आवश्यकता है इसलिए भारतीय संस्कृति एंव सनातन धर्म में सबके लिए पूजा का प्रावधान किया गया परन्तु अमेरिका जैसे विकसित, व्यापारी एंव आतंकवादी देश ने हमारे ग्रन्थों में वर्णित नीम, पीपल, तुलसी जैसे वृक्षों का पेटेन्ट करा लिया. यह विकृत सोच एंव नीचता की पराकाष्ठा है और इसी प्रकार की सोच आतंकवादी विचारों को जन्म देती है. आतंकवादी विचार जब मनमाफिक सफलता पा लेते हैं तो उसमें अहंकार पैदा हो जाता है और कभी-कभी सफलता के लघुतम मार्ग का अनुसरण सज्जन लोग भी करने लगते हैं.

विश्व में सवाधिक आतंकवादी अमेरिका, इस्लाम एंव ईसाईयत है. अमेरिका का मूल सिद्धान्त है -सर्वप्रथम किसी देश के अर्थतन्त्र को पंगु करना, वहाँ अपना व्यापार बढाना, आतंक फैलाकर उस राष्ट्र को अपने हथियार खरीदने के लिए बाध्य करना और इस प्रकार अपना प्रभुत्व बढाना. पाकिस्तान, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, इजरायल, ओसाता-बिन-लादेन की पीठ पर किसका हाथ था? और जब स्वार्थी हितों में टकराहट हुई तो परिणाम

सामने है. कालान्तर में अमेरिका के सहयोगी रहे ये सभी देश आज आतंकवाद के मूल केन्द्र हैं.

इस्लाम की अवधारणा में इसके प्रारम्भ से ही संख्या एंव ताकत के बल पर साम्राज्य बढाने की लालसा छुपी है. सदैव इस्लामिक सत्ता परिवर्तन तलवार के दम पर हुआ. पुत्र द्वारा पिता की हत्या, भाइयों की हत्या, माँ-बाप का कत्ल मात्र सत्ता प्राप्ति के लिए इतिहास में वर्णित हैं. जब सत्ता प्राप्ति में तलवार की ताकत ईसाइयों और यहूदियों के सम्मुख कमजोर पडने लगी तब मौहम्मद पैगम्बर साहब ने तत्कालीन धर्मग्रन्थों से बगावत कर नए इस्लाम धर्म का सूत्रपात किया और संदेश किया-काफिरों को खत्म कर दो, जो इस्लाम न अनपाए उनकी बहू-बेटियों का हरण करो, उन पर कर लगाओ तथा अपनी जनसंख्या में अनियन्त्रित वृद्धि करो. सम्पूण्र विश्व में जनसंख्या वृद्धि के इस्लामी आतंकवाद का खौफ देखा जा सकता है. जब जनसंख्या वृद्धि हुई तो खाने की चीजों का अभाव, सुविधाओं में कमी और अज्ञान में वृद्धि भी हुई. परिणामतः इस्लामी समाज के चन्द महत्वाकाँक्षी लोगों द्वारा समाज को गुमराह करना और आतंकवाद को प्रश्रय देने का खेल प्रारम्भ ।

धर्म के द्वारा आतंक का सबसे जीवन्त उदाहरण ईसाईयत है. आज पश्चिमी जगत द्वारा पोषित ईसाईयत, धर्म और सेवा की आड़ में आतंकवाद की सबसे बडी पोशक है. गरीब, पिछडों को धन का लालच देकर धर्म-परिवर्तन कराना, उनकी सभ्यता एंव संस्कृति को खत्म करना और मात्र ईसाईयत के प्रचार द्वारा अमेरिका एंव पश्चिमी जगत का वर्चस्व बढाना ही इनका उद्देश्य है. ये सभी क्रियाएं स्वंय आतंकवादी है तथा प्रत्यक्ष एंव परोक्ष रुप से आतंकवाद को बढाने वाली हैं.

विश्व के सम्मुख उपस्थित आतंकवाद की समस्या से कैसे निपटा जाए, यह महत्वपूर्ण एंव ज्वलन्त प्रश्न है. मेरे विचार में इस विश्वव्यापी समस्या का निदान हम सबके पास है जिसमें सनातन धर्म के मूल सिद्धान्तों, मानवतावाद, राष्ट्रवाद, छुआछूत का भेद खत्म करना, जातिवाद को समाप्त करना, का पालन प्रमुख है. **भय बिन होय न प्रीत** के सिद्धान्त को राजनेताओं को अपनाना होगा. आतंकवादी कोई भी हो, किसी जाति अथवा राजनैतिक दल की विचार धारा का हो अथवा कोई आतंकवादी **(संगटन)** का समर्थक हो, वह भी आतंकवादी है और उसकी सजा मात्र मौत है, उस पर कोई राजनीति नहीं की जा सकती है.

मानवता को कलंकित करने वालों को सजा-ए-मौत -आतंकवाद खत्म, धर्म -परिवर्तन कराने का प्रयास करने वाले राष्ट्रद्रोही-आतंकवाद खत्म, जातिवाद, क्षेत्रवाद का प्रचार-प्रसार करने पर पाबन्दी-आतंकवाद खत्म, मानवाधिकार संस्थाओं द्वारा आतंकियों को मारने के तरीकों पर हल्ला मचाने पर बन्दिश-आतंकवाद खत्म, एक राष्ट्र-समान नागरिकता का पालन,आतंकवाद खत्म तुष्टिकरण करने वाले नेताओं एंव दलों पर प्रतिबन्ध-आतंकवाद खत्म, अशिक्षित, गरीब, पिछडों को शिक्षा एंव रोजगार आतंकवाद खत्म, आरक्षण समाप्त कर योग्यतानुसार नौकरी-आतंकवाद खत्म भ्रष्टाचार के लिए कडी सजा का प्रावधान-आतंकवाद खत्म, सर्वसुलभ एंव शीघ्र न्याय-व्यवस्था-आतंकवाद खत्म, आओ, हम सब मिलकर आतंकवाद को खत्म करें ।

दाउजी की डायरी सेः....

हम देखते ही रह गये और प्यार हो गया.....: **लालू**

हम रोकते ही रह गये और इजहार हो गया...**मुलायम**

हम चुनाव पूर्व भी समझौता का कटोरा लिए खड़े है, लेकिन कहीं दाल गलती नजर नहीं आ रही है, और चुनाव बाद भी यहीं करेगें....: **अमर सिंह**

हम तेरे प्यार में क्या-क्या गॅवा बैठे......**मुलायम**

परिचर्चा

वर्तमान परिवेश में साहित्यकारों की भूमिका

- संकट के दौर में साहित्यकार समय की नब्ज को पहचान कर लेखन कर रहे है.
- साहित्यकार की वैचारिक प्रतिबद्धता लेखकीय स्वतन्त्रता को बाधित नही करती है.
- वर्तमान दौर साहित्यकारों के लिये संकट का समय है परन्तु वह संघर्षरत् रहकर भी सक्रीय है

नन्दलाल भारती

साहित्यकार अपनी भूमिका पर तटस्थ है. आजादी के दिनों में साहित्यकारो ने जिम्मेदारी के साथ अपनी भूमिका निभायी. साहित्यकारों की कलमें जातीय-धार्मिक उन्माद,श्रेष्ठता-निम्नता, गरीबी-अमीरी से उपजी सामाजिक पीड़ा के आक्रोश को कम करने के मुद्दे पर खूब चली है और आज भी थमी नही है. संकट के दौर में साहित्यकार समय की नब्ज को पहचान कर लेखन कर रहे है. यही वजह है कि जनसामान्य साहित्यकार के व्यक्तित्व को उसकी रचनाओं में ढूढता है जो साहित्यकार के तटस्थ भूमिका का द्योतक है.

साहित्यकार की वैचारिक प्रतिबद्धता लेखकीय स्वतन्त्रता को बाधित नही करती है. यदि विचार कट्टरवादिता/रूढवादिता के शिकार हो जाते है तो लेखकीय स्वतन्त्रता पर प्रतिघात होता है. ऐसे विचार मानवता के प्रति न्याय नही कर पाते. साहित्यकार भी विवाद के घेरे में आ जाता है. साहित्यकार अपनी भूमिका के साथ न्याय करता है तो ऐसे विचार सभ्य समाज के बीच जरूर मान्य होगें. यदि साहित्यकार अपनी भूमिका के प्रति प्रतिबद्ध है, उनके विचार कल्याणकारी है, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का मन्तव्य रखते है तो कबीर की भांति उसके विचार अवश्य प्रातः स्मरणीय होगें.

वर्तमान दौर साहित्यकारों के लिये संकट का समय है परन्तु वह संघर्षरत् रहकर भी सक्रीय है परन्तु कुछ सौभाग्यशाली साहित्यकारों को छोड़कर, दूसरे साहित्यकारों के विचार पाठकों तक नही पहुंच पा रहे है भला हो कुछ साहित्यिक पत्रिकाओं को जो साहित्यकारो नवोदित साहित्यकारों को आक्सीजन दे रही है. ये पत्र-पत्रिकायें भीं संकट के दौर से पीड़ित है अतः रचनाकारों को पारिश्रमिक देने में असमर्थ है. हां हौशला जरूर बढा रहे है. हौशले और सम्भावनाओं के उड़नखटोले पर साहित्यकार अपनी भूमिका के प्रति तटस्थ है, जबकि न तो रायल्टी का सहारा है और नही कोई सरकारी सहयोग. साहित्यकार जरूरतों में कटौती कर अथवा कर्ज करके किताब छपवाने की हिम्मत जुटा भी लेता है तो उसके लिये बाजार उपलब्ध नही हो पाती, क्योकि वह पुस्तक बेचने का कार्य नही कर सकता. परिणाम स्वरूप किताबे सन्दूकों में बन्द होकर रह जाती है. आज चिन्तन का विषय है कि रचनायें /कृतियां पाठको तक पहुंचे कैसे.

साहित्यकारों को चाहिये साहित्यिक संस्थाओं के माध्यम से स्वयंसेवी संस्थाओ का निर्माण कर सरकार से अनुदान प्राप्त कर पुस्तक प्रकाशन एवं विक्रय खुद करें. सरकार दूसरी अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं को अनुदान दे रहीं है. साहित्यिक-स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद सरकार अनुदान दे कर सकती है. संकट के दौर से गुजर रहे साहित्यकारों एवं साहित्यिक संस्थाओं की मदद के लिये सरकार को आगे आना चाहिये. साहित्यकारों के संघर्ष को स्वीकार कर, उचित मूल्यांकन कर और उचित सहयोग देने की जरूरत है. आज का पाठक जो किताबों से दूर जा रहे है, उन पाठकों को भी साहित्य के महायज्ञ में आहुति देनी होगी. दुनिया जानती है साहित्यिक एवं किताबी ज्ञान अन्य माध्यमों की तुलना में कही ज्यादा बेहतर और जीवनोपयोगी होता है.

वर्तमान समय में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता के क्षेत्र में अच्छे साहित्य का सृजन हो रहा हैं. सामाजिक न्याय के क्षेत्र में दिये गये योगदान को प्रेमचन्द को कभी नहीं भूलाया जा सकता है. सामाजिक कुरीतियों और नारी शोषण पर आधारित उनकी रचनायें कर्तव्यबोध, समाज को जोड़ने एवं सद्भावनापूर्ण वातावरण निर्मित करने में अहम् भूमिका निभायी हैं. परिवर्तन तो वैचारिक क्रान्ति से आता है. वर्तमान दौर में अन्य साधनों की घुसपैठ की वजह से जनमानस किताबों से दूर होता जा रहा है. ऐसे दौर में आवश्यक हो गया है कि लेखको के विचार उनकी रचनायें गांव एवं शहर तक के पाठकों तक पहुंचे और आवाम के बीच चर्चा का विषय बने. यथार्थ के धरातल पर भारतीय अस्मिता जो हमारे देश के धर्म आध्यात्म, योग विज्ञान और साहित्य के रूप में विराजमान है वह दुनिया के लिये गर्व का विषय है. आज भी उम्मीदों का सोता सूखा नही है, रोजागरोन्मुखी शिक्षा/नैतिक शिक्षा, सामाजिक समानता एवं न्याय, सामाजिक बुराईयों, गरीबी उन्मूलन राष्ट्र हित,देश-जोड़ो आदि मुद्दों पर साहित्यकार कलम चलाने के लिये प्रतिबद्ध हैं. देश और समाज हित में यह जरूरी भी है. साहित्यकारों के बारे में भी सरकार को सोचना चाहिये.

उनके हितार्थ कदम उठाने चाहिये. सरकारी तौर पर परिचय पत्र जारी करने चाहिये. उनके आवागमन के लिये न्यूनतम् दरों पर टिकट उपलब्ध कराया जाना चाहिये एवं अन्य आवश्यक सुविधाये भी. साहित्यकार की प्रतिबद्धता पर सरकार को ईमानदारी से विचार कर संरक्षण प्रदान करना चाहिये. पाठकों तक साहित्य आसानी से पहुंच सके इसके लिये भी मदद करना चाहिये. पाठकों तक जब ये साहित्य पहुंचेगे तभी साहित्यकार को सकून मिलेगा और ऐसी पूरी सम्भावना भी है. सच, अंधियारा चाहे जितना भी गहरा क्यों न हो वह सुबह तो जरूर आयेगी जब संकट के दौर खत्म होगे.

वर्तमान समय में साहित्यकार मुश्किलों के दौर से गुजरते हुए भी अपनी भूमिका बड़ी जिम्मेदारी के साथ निभा रहे है. देखना है क्या सरकारें और आज के पाठक अपनी भूमिका जिम्मेदारी के साथ निभा पाते है?

वक्त गवाह है साहित्यकार तटस्थ है अपनी भूमिका पर संकटकाल में भी. वह अपनी भूमिका को नैतिक दायित्व एवं कर्तव्यबोध की तुला पर तौल कर सृजन कार्य कर रहा है क्योंकि वह भैतिकवाद,पाश्चात्य संस्कृति के कुप्रभाव और नैतिक मूल्यों में आ रही गिरावट से आहत है. नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना के लिये व्यग्र है. समय के साथ सामंजस्य बिठाकर स्वामी विवेकानन्द के पद चिन्हों पर चलते हुए गर्जना कर रहा है समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिये, युवाशक्ति को जागृत करने के लिये. बुराईयों पर कुठराघात करने के लिये. सद्भावनापूर्ण एवं सभ्य समाज के निर्माण के लिये. कर्तव्यबोध एवं नैतिक मूल्यो की पुर्नस्थापना के लिये. अमन शान्ति के लिये और सुरक्षित कल के लिये. यही वक्त की मांग है और वर्तमान समय में साहित्यकार की भूमिका भी.

इंदौर, म०प्र०

कैलाश चंद्र जोशी

आज आदमी सुख-सुविधाओं को पाने के लिए आपाधापी में लगा हुआ है. इस दौड़ में उसकी संवेदनाएं लुप्त होती जा रही है. वह मशीन बनता जा रहा है. यही तथ्य सच्चे साहित्यकारों के चिंता का विषय है. मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं की रक्षा करना इस दौर में साहित्यकारों के लिए सबसे बड़ी चुनौती हैं. क्योंकि केवल साहित्यकार ही अपने साहित्य के माध्यम से मनुष्य में मानवीय मूल्यों की पुर्नस्थापना कर सकता है.

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है, परन्तु मैं समझता हूँ कि वर्तमान परिवेश में साहित्य को दीपक बनना होगा. जो समाज को रोशनी दे सके, दिशा दे सके. दर्पण तो केवल सामने वाले का प्रतिबिंब दिखाता है. तात्पर्य यह है कि दर्पण रुपी साहित्य द्वारा केवल समाज का प्रतिबिंब दिखाने से अर्थात् केवल समस्या को उठाने मात्र से काम नहीं चलेगा, समस्या का समाधान भी साहित्य में होना चाहिए. विडम्बना है कि समाज के आ रहे हल्केपन के साथ साहित्य में भी हल्कापन आ गया है क्योंकि समाज जैसा दर्पण देखना चाहता है साहित्यकार वैसा ही दर्पण लिए घूम रहे है. जिसका प्रमाण पत्र-पत्रिकाओं, टी.वी.चैनलों, विज्ञापनों, फिल्मों यहॉ तक कि न्यूज चैनलों आदि में व्याप्त अपसंस्कृति, अश्लीलता, फूहड़ता से मिल रहा है. कविता के नाम पर चुटकले बाजी आखिर क्या है? मनोरंजन का यह सस्ता व घटिया तंत्र सर्वत्र छा गया है और समाज का अंग बनकर नई पीढ़ी के लिए उनकी जीवन शैली बनता जा रहा है. इस प्रकार नई पीढ़ी को यदि कोई उनकी मूल संस्कृति का बोध कराने का प्रयास करेगा तो उनके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ेगा. उल्टा वह इन सब बातों का विरोधी हो जायेगा.

साहित्य व समाज एक दूसरे के पूरक है. समाज में जैसे-जैसे परिवर्तन होते है वैसा ही साहित्य रचा जाता है और साहित्य जैसा होगा वैसा ही समाज भी बनता है. अतः समाज और साहित्य के बीच की कड़ी साहित्यकार है. अतः उसे समाज में हो रहे परिवर्तन की धारा में न बहते हुए एक द्रष्टा की भॉति परिवर्तन को स्वीकार करते हुए देशकाल के अनुसार ऐसे साहित्य की रचना करनी होगी ताकि समाज कभी भी मानवता की संवेदनाओं की मुख्य ध ारा से न भटके. जिस दिन साहित्यकार, जिस धारा में समाज बह रहा है उसी धारा में बहने लग जायेगा तो उस दिन समाज में मूल्यहीनता की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी. अतः साहित्यकार को जरा हटकर चलते हुए समाज की धारा बदलनी होगी. अतः उसे मनमुख समाज जैसा साहित्य चाहता है वैसा न लिखते हुए समाज के हित में जो है उसे निर्भीकता, गंभीरता, सरसता से लिखना चाहिए जिससे समाज की विकृतियां दूर हों. साहित्यकार को कड़वे घूंट पीकर सब करना होगा. साहित्यकार अर्थात् जो सत्य का साथ दें. ...और जैसा कि इतिहास साक्षी है कि सत्य का साथ देने वाले राजा हरिश्चन्द्र को चंडाल बनकर भी परीक्षा देनी पड़ी थी. साहित्य मनोरंजन का पर्याय नही हैं और न ही साहितयकार कोई जोकर. साहित्यकार मर्म का प्रहरी है. जिसके लिए वह भूखा प्यासा रहकर भी समझौता नहीं कर सकता.

वर्तमान भूमंडलीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी के युग से सबसे बड़ा खतरा साहित्य और संस्कृति के पैदा हुआ है. इस खतरे से निपटने के लिए समाज के पास केवल साहित्यकार ही एकमात्र योद्धा है. इतिहास साक्षी है कि जब जब समाज पथभ्रमित हुआ है साहित्य ने उसका मार्गदर्शन किया है. यदि

भारत के पास रामायण तथा महाभारत जैसे अमूल्य साहित्य ग्रंथ न होते तो भारत कालांतर में तमाम आक्रांताओं के आक्रमण की विभीषिका के दौरान अपनी पहचान कब का खो चुका होता. साहित्य का संबंध सदा से ही संस्कृति व संवेदनाओ से रहा है. अतः परिवर्तनशील संसार में जीवन के यथार्थ को समय समय पर बखूबी चित्रित करना साहित्यकारो के संदैव चुनौतीपूर्ण रहा है.

मानवीय मूल्यों का विकास व उनकी रक्षा करना साहित्यकार का लक्ष्य होना चाहिए. जिस प्रकार आजादी के आंदोलन के समय साहित्यकारों के सामने एक उद्देश्य व लक्ष्य था ठीक उसी प्रकार इस वैश्वीकरण के दौर में भी साहित्यकारों को भारतीयता की पहचान एवं संस्कृति की रक्षा का लक्ष्य निध ारित करना चाहिए. प्रदूषण, उजड़ते गॉव, आतंकवाद, सुविधापरस्ती, फैशनपरस्ती, स्वार्थपरकता, भ्रष्टाचार आदि आपसंस्कृति के विरुद्ध साहित्यकार को विभिन्न कोणों से देखते हुए विभिन्न विधाओं की धार से समाधान ढूंढने हेतु प्रयत्नशील रहना होगा. निश्चित ही साहित्यकारों का यह त्याग वर्तमान परिवेश में मानवता की पहचान बचाने में सफल होगा. ऐसा मेरा विश्वास है.

औरैया, उत्तर प्रदेश

दाउजी की डायरी से

अपनी तो हर तरफ से बल्ले बल्ले है, अगर कांग्रेस जीती तो प्रधानमंत्री पद सुरक्षित है हीं, अगर हारी तो भी कुछ खास फर्क नहीं पड़ने वाला, राज्यसभा की सीट तो सुरक्षित है ही. ...: **मनमोहन सिंह**

विधिश्री पवन चौधरी 'मनमौजी'

साहित्य मनुष्य की सृष्टि है. मनुष्य में जो कुछ सुन्दर है, विशाल है, आदरणीय है, आनन्दप्रद है और अनुकरणीय है, उसी की मूर्ति का नाम साहित्य है. साहित्य अपने समय का इतिहास है, इतिहास से कहीं अधिक सत्य. साहित्य देश की सर्वोत्तम भावनाओं और विचारों का संग्रह हैं. साहित्य हृदय की वस्तु है, मस्तिक की नहीं. जिन्हें धन वैभव प्यारा है, साहित्य मन्दिर में उनके लिए कोई स्थान नहीं है.

साहित्य की सामग्री मनुष्य का जीवन है, जो स्वभाव से देवतुल्य है. जमाने की जलालत और परिस्थितियों के वशीभूत होकर वह अपने देवत्व गंवा-लुटा बैठता है. साहित्य इसी देवत्व को पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न करता है.

साहित्यकार जन्म से सौन्दर्य का उपासक होता है. जीवन के प्रत्येक पल में, जिन्दगी के कर्म में, सौन्दर्य का जलवा देखना चाहता है.साहित्यकार पैदा होता है, बनाया नहीं जाता. हां, उसमें निखार हो सकता है, लाया जा सकता है. साहित्य को समाज का दीपक मानता है, दर्पण नहीं, जिसकी प्रकृति-प्रवृत्ति शुभ होती है, जिसका कर्म प्रकाश फैलाना है, संतोष सुख का प्रकाश, जिसके भाव गहरे होते हैं और प्रखर होते हैं, जो जीवन में बुद्धू बनकर नहीं, बल्कि बुद्धिमान बनकर चलने में विश्वास रखता है, उठने की कोशिश करता है, गिरता है, उठता है. साहित्यकार का मुख्य उद्देश्य मान - सम्मान, कीर्तियश कामना भले ही हो. उसके अंदर भावुक हृदय, सुन्दर लेखन शैली और मौलिक प्रतिमा का होना आवश्यक है.

साहित्य के सही मायने में अर्थ और आश्य तथा साहित्यकार के अस्तित्व, लक्षण एवं महत्व का सांकेतिक परिचय होने के पश्चात उसकी भूमिका पर किसी प्रकार का कोई आशंका तो शेष नहीं रह गई लगती है. फिर भी, भ्रष्टाचार समूचे भारतीय समाज में शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र अथवा वर्ग हो जो भौतिकवाद, भाई-भतीजावाद नामके आतंकवादियों के आक्रमता का अपवाद कहलाने में सक्षम हो. राजनीति, धर्म एवं कानून तक तो इसकी चपेट में है. ऐसे में केवल साहित्यकार से ही अपेक्षा की जा सकती है कि वह अपनी भूमिका का निर्वाह करें. कम से कम ऐसा करने का प्रयास तो अवश्य करें. उसी पथ पर अग्रसर रहने का संकल्प करे जो कुदरत ने उसके लिए निर्धारित किया है. समस्या या दुविधा इस पथ को जानने-पहचानने में हो सकती है, पर जानने पहचानने के पश्चात नहीं.

लम्बे निजी अनुभव के आधार पर मैं यह दावा कर सकने की स्थिति में हूँ कि साहित्यकार की निर्धारित भूमिका के निर्वाह में संतोष और सुख दोनो हैं, जो अन्य सुखों से अधिक नहीं तो कम भी नहीं है. कथित पथ पर जो समस्याएं आती है, उनका समाधान भी स्वतः हो जाता है. अपेक्षित अथवा अनेपक्षित ढंग से. उनके कारण निराश-हताश होने की कतई आवश्यकता नहीं है. आवश्यकता केवल साहित्यगत समाज की सेवा करने में अडिग आस्था को बरकरार रखने मात्र की है. तर्क, साहित्यकार सामान्य प्राणी नहीं होता, न ही समाज का साधारण सदस्य होता है. वह तो कुदरत का अद्भुत कलाकार, अर्थात् कुशल दूता होता है, जिसको विशेष दायित्व का निर्वाह करने के लिए संसार में भेजा जाता है. कुदरत भी उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में कभी कोई कोताई नहीं करती. निसंदेह-निर्विवाद, एक साहित्यकार द्वारा दूसरे साहित्यकार की भावनाओं के

सत्कार, आवश्यकताओं की संतुष्टि में सहयोग का सर्वप्रथम स्थान है. साहित्यकार की समानता केवल सैनिक कमान्डों के साथ की जा सकती है. दोनों के यथार्थ और आदर्श एक है. साहित्य सेवियों के पास उनकी कलम के अलावा और क्या है? जब तक हम अपने साहित्य सेवियों का सत्कार करना नहीं सीखेंगे, साहित्य कभी प्रगति नहीं करेगा.

स्वतंत्रता से पूर्व राजनेताओं, साहित्यकारों का स्वंतत्रता संग्राम एवं समाज उत्थान में विशेष योगदान रहा है. उन्होंने कलम द्वारा विदेशी शासन के विरुद्ध बिगुल बजाया, अनेक आंदोलन किए, अभियान चलाए. इन्हीं के कारण, भारत स्वतंत्र हुआ, समाज में क्रांतिकारी सुध ाार हुए. इन साहित्यकारों, जिनमें पत्रकार भी शामिल है. की सूची लम्बी है. इनमें कुछेक के नाम आज भी आदर सहित स्मरण किये जाते हैं. मसलन गणेश शंकर विद्यार्थी, बालमुकुन्द गुप्त, मैथलीशरण गुप्त, महात्मा गांधी, महाकवि निराला, प्रेमचन्द्र, यशपाल, सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', दिनकर, महादेवी वर्मा, पदमा नायडू आदि.

वर्तमान में भी साहित्यकारों की भूमिका कम नहीं है. इसके महत्व को कम आंकना अनुचित होगा. स्वतंत्रता से पूर्व इसका महत्व स्वतंत्रता प्राप्ति तक सीमित था, स्वतंत्रता के पश्चात इसके महत्व का विस्तार हो गया है, जो केवल स्वतंत्रता को बरकरार रखने तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इसको सुदृढ़, सुंदर और सार्थक बनाने का हो गया है. और ऐसा करने का अर्थ समाज को सामूहिक दृष्टि से समृद्ध, संतोषजनक एवं सुखद बनाना है. साथ ही भारतीयता को अधिक भव्य बनाना भी है-सभ्यता, शिक्षा, संस्कृति एवं संस्कार सभी दृष्टियों से. और इसके लिए केवल साहित्य एवं साहित्यकारों द्वारा योगदान पर ही निर्भर रहना अपेक्षित है. इनके विकास की अनुपस्थिति में राष्ट्र का विकास आध ाा-अधूरा, आंशिक-अपंग ही कहलाएगा. कहना न होगा कि राष्ट्र के भौतिक विकास की अपेक्षा एवं असलियत सांस्कृतिक-साहित्यिक विकास की तुलना में अधिक सहज है. जितना समय राष्ट्र के भौतिक विकास में अपेक्षित हैं, उससे कई गुना समय सांस्कृतिक विकास के लिए अपेक्षित है. भौतिक विकास की प्रक्रिया की गति तनिक तेज होती है, हो सकती है. किन्तु सांस्कृतिक चेतना के उत्पन्न होने में अधिक समय लगता है. इसकी गति की चाल कछुए समान होती है. भवन निर्माण एवं भावना निर्माण में भारी अंतर होता है. पर भवन निर्माण के साथ भावना निर्माण भी अत्यंत आवश्यक है.

निष्कर्षतया कहा जा सकता है कि साहित्यकारों की भूमिका वर्तमान परिवेश में उससे कहीं अधिक वांछनीय है, जितनी कि अतीत में थी, और भविष्य में भी वर्तमान से सदैव कहीं अधिक रहेगी.

नई दिल्ली

नरेश कुमार सचदेवा

वर्तमान समय में तकनीकी एवं विज्ञान के विकास से विद्यार्थीयों की सृजनात्मक क्षमता नष्ट होती जा रही है. ऐसे में बाल साहित्यकार महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते है. भारतीय संस्कृति के तत्वों को बाल-कविताओं, नाटक, कहानियों एवं उपन्यास द्वारा जाग्रत किया जा सकता है. इसके लिए सक्षम बाल रचनाकारों को आगे आना होगा. वर्तमान बाल साहित्य इंटरनेट एवं टीवी चैनलों द्वारा प्रदूषित हो रहा है. देश की आवश्यकता के अनुकूल बाल साहित्य यदि बच्चों को उपलब्ध कराया जाए तो भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों से बच्चे सहजता से परिचित व प्रभावित तो होंगे ही, इससे संस्कृति की रक्षा भी होगी.

कहने का तात्पर्य यह है कि जिस साहित्यकार की रचना संसार उपयोगी, आवश्यक और समसामयिक होती है, साहित्य की दृष्टि से अनूठी और मोहक होती है, वे वंदनीय माने जाते है. साहित्य के द्वारा भावनाओं को प्रभावित करना एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य है जिससे संसार का भाग्य एवं भविष्य जुड़ा हुआ है. अतः उसके प्रयुक्त करने का अधिकार सत्पात्रता की आग में तपे हुए अधिकारियों एवं मनीषियों को ही मिलना चाहिए जो कला को सद्भावों और सद्विचारों का माध्यम बना सके. साहित्यकार की लेखनी ऐसी होनी चाहिए जो निर्जीव व निष्प्राण हो रहे मानव में प्राण फूंक सके. प्रत्येक साहित्यकार ने सदैव इसी तप-संजीवनी के बल पर समाज में उल्लास बिखेरा हे व जीवन बांटा है. बांटने और बिखेरने के तौर तरीके समय और परिवेश के अनुसार भले ही भिन्न रहे हों, किन्तु इसके पीछे रहने वाला भाव सदा एक ही रहा है और वह है विकास पथ पर गतिमान मानव के चरण रुकने न पाएं.

इस भाव के बहुआयामी विकास के लिए अपनी चिन्तन-क्षमता, कल्पना शक्ति, भाव-सम्पदा, तर्क सामर्थ्य खपाने वाले तपस्वी को साहित्य संसार भूला नहीं सकता जो आजीवन तप कर अपनी लेखनी द्वारा जीवन विखेरते हैं व जनमानस का मार्ग प्रशस्त करते है. ऐसे युग निर्माताओं व साहित्य मनीषियों को समाज श्रद्धापूर्वक पलकों पर विठाता है. अन्त में मैं यही कहूँगा कि

ऐसे कलम के सिपाहियों को मेरा शत-शत प्रणाम

जो अपनी कलम रुपी संजीवनी से,

फूंकते हे निर्जीव मानव में भी प्राण।

पानीपत, हरियाणा

सुखवर्ष कंवर 'तन्हा'

अच्छा साहित्य वही है जो दिल से चल कर दिल तक पहुँचे. साहित्य को रख्ने के लिए गहरे पानी में पैठना पड़ता है. उथले और गंदले पानी में पैठ कर साहित्य नहीं रचा जाता. सागर में जाकर ही मोती निकाले जा सकते है. साहित्य रचने के लिए थोड़े इतिहास की जरुरत होती है और उसमें कुछ यादें कुछ आसपास की बातें भी होती है. साहित्य एक मन्दिर है जिसमें हम सब बुद्धिजीवियें ने मिलकर एक-एक ईंट लगानी है तथा उसे शिवालय बनाना होगा.

इसमें केवल अच्छाइयों या बुराइयों का बखान नहीं करना बल्कि उनका संगम करना होगा. साहित्य तो एक महासागर है जिसमें बहुत सी नदियॉ समाहित हो सकती है. अलग-अलग विधाओं के संगम से ही महासागर बनता है. न साहित्य सीमित है न साहित्य की एक भाषा, हर भाषा में साहित्य है, साहित्यकार है.

साहित्य रचना भी एक उड़ान की तरह है. इस उड़ान के लिए केवल पंखों का होना ही काफी नहीं हौसले भी बुलन्द होने चाहिए. यह एक प्रकार की साध ाना है. हमें एक अच्छा साधक बनना है. किताबें तो बहुत पर आम आदमी से दूर. आम आदमी के लिए साहित्य रचना है न कि केवल कुछ बुद्धिजीवियों के लिए. आम आदमी के लिए साहित्य रचने के लिए आपको आम आदमी के बीच जाना पड़ेगा. स्वयं को अलग-थलग रख कर आप कैसे उनके मन को छूने वाला साहित्य रच सकोगे ऐसा साहित्य रचा जाए कि आम आदमी को लगे कि वह भी कहीं न कहीं उन्हीं के बीच में हैं तभी वह आगे समझ सकता है. आजकल ऐसी ही रचनाएं लिखी जा रही है जो आदमी से कोसों दूर है तभी तो इनकी मार्किट नहीं होती. बड़ी-बड़ी अलमारियों में सज कर रह जाती है. लेखक का फलक तो बहुत बड़ा होता है उसे केवल राजनीतिक गुटबंदी तक ही सीमित नहीं होना है. लेकिन अब मुझे लगने लगा है कि साहित्य कहीं गुटबंदी में घुट कर ही न रह जाए और अपनापन न छोड़ दें. ऐसा साहित्य नहीं रचना चाहिए कि जैसे आप एक ठिगने से आदमी के सामने सौ मंजिली इमारत खड़ी कर दें और उसे कहें कि तुम बताओ कि ऊपर की मंजिल में क्या हो रहा है. ऐसा साहित्य रचना तो आम जनता के साथ भद्दा मजाक है. साहित्य एक आदर्श समाज की अभिव्यक्ति है. इसमें निरन्तर विस्तृत होने की शक्ति है. इसमें व्यक्तित्व को पूर्ण विकसित करने की क्षमता होती है. पढ़ने, सुनने से विचार आते है. विचार ही हमारी मुख्य प्रेरक शक्ति है. विचार प्राप्त करने का सबको अधिकार है और क्षमता भी है. केवल सही रास्ते तथा, सही समय की, सही मार्गदर्शन की जरुरत होती है. शिक्षक या अच्छे साहित्यकार, या लेखक में यह शक्ति उसकी कलम में इतनी ताकत होती है कि वह समाज में परिवर्तन ला सकेता है और लाता भी है. केवल बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखकर जो आम जनता की समझ से परे हो कोई बड़ा लेखक नहीं बन जाता. उसे जनता के पास बैठ कर उनके दुख दर्द को लेकर लिख कर बांटने हैं. उनकी समस्याएं समाज तक, राष्ट्र तक पहुंचानी है. साहित्य तो ज्ञान है और ज्ञान एक दीपक है जो अज्ञानी मन का अंधेरा हरता है तथा उनके जीवन को उज्जवल बनाता है. हमने दीपक के संग दीपक को जलानाह ै तभी दीपक के नीचे का अन्धेरा हर सकेगा। उसी देश के उसी भेष के साहित्य को मिलना होगा. कठिन प्रश्नावली तैयार न करें जो कि आम जनता के सिर के ऊपर से गुजर जाए. हमें तो इसको जन जन में फैलाना होगा. बड़ी-बड़ी डिग्रीयां हासिल कर आम जनता से दूरी रखे गए वह जनता के दिल तक कैसे पहुंचेगा. यह बड़ी-बड़ी पुस्तकें तो केवल कुछ बुद्धिजीवि या ज्ञानी लोगों के लिए ही हैं. हमें तो जनता की भाषा में जनता का दर्द जनता तक पहुंचाना है. यही हमारा कर्तव्य है. इसे शहर से गांव की ओर ले जाइए. हमारा देश गांव प्रधान देश है तो साहित्य में गांव की सोंधी खुशबू भी होनी चाहिए.

सृजन थमना नहीं चाहिए, सृजन यदि थम गया तो सृष्टि थम जाएगी. सृष्टि थम गई तो सारा जहां थम जाएगा. सूर्य उदय होकर अपनी उज्जवल रश्मि से, पूर्ण आभा से सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड को प्रकाशित कर देता है. उसी तरह एक अच्छा साहित्य अपनी इसी आभा से साहित्य रुपी महासागर को उज्जवल करता है. इस संसार में बड़े-बड़े राष्ट्र, बड़ी-बड़ी इमारतें समय आने पर धाराशाही हो जाती है पर विचार सदा जीवित रहते हैं. रचनाएं अमर रहती है कालजयी बन जाती है.

लेखक मानव मस्तिष्क की स्वयं उत्पादक प्रक्रिया है. बुद्धिजीवी को जब कुछ घटनाएं या सामाजिक विषमतांए झकझोरती है तो वह कलम उठा लेता है और पर सोने में सुहागा कलम में दम हो तो वह रचना और भी सुन्दर तथा सशक्त बन जाती है.

विद्या को प्राप्त करने का अधिकार और क्षमता सब में है. केवल सही रास्ते तथा सही समय की, सही मार्गदर्शन कराने वाले शिक्षक की या बुद्धिजीवी लेखक की जरुरत होती है. क्योंकि लेखक ही व्यक्ति या समाज में परिवर्तन लाता है. जिसकी गोद मे ंसिर रखकर सारे गम शर हो जाते हैं, उसे माता

कहते हैं विद्या भी माता के समान हित करने वाली है. पिता के समान रक्षा करती है और चारों दिशाओं में कीर्ति फैलाती है. विद्या हीरा बनाती है और विद्या आती है भाषा से.

साहित्य को सीमित मत कीजिए. इसके विस्तार के लिए सबको प्रयास करना होगा. जड़े तभीा मिट्‌टी पकड़ती है जब मिट्‌टी में उन्हें पकड़ने लायक नमी होती है. मुरमुरी मिट्‌टी में कभी भी जड़ों की नहीं बांधा जा सकता. जब जड़े ही नहीं बंधेगी तो नयी कोंपले कहॉ से मिलेगी. हमें उस मिट्‌टी को प्यार और दुलार से सींचना होगा. कभी भी थोपे हुए शब्द दिमाग में जल्दी नहीं पहुँच पाते. फिर इन कपोलों की खुशबू तो आपको जन-जन तक पहुँचानी होगी. इसे कठिन और तीव्र गति का ना बनाकर सुन्दर फूल के रुप में जन-जन पहुचाना होगा, 'जीवन में जो क्रांतियां होती है वह बाहर से उठकर भीतर की तरफ नहीं जाती बल्कि भीतर से बाहर की ओर उठती है.' और यह क्रांतियां तभी उठती है जब भीतर जागृति होती है और ज्ञान के दीपक जलते हैं.

विचारों के युद्ध में पुस्तक ही एक अस्त्र है. विचार विद्या से आते है और प्रखर बुद्धि में विचार समात हैं, ज्ञान से साक्षरता से अच्छी किताबों के पढ़ने का रास्ता खुलता है. यह सब होता है आसान भाषा से, आसान भाषा से रुचि पैदा होती है. वह रुचि लेखकों मिलकर हिन्दी के प्रति आम जनता में पैदा करनी है. हिन्दी को हिन्द की भाषा बनाना है.

फूलों की बातें सब करते हैं, कांटो की कसक किसने जानी।

आकाश की बातें सब करते हैं, धरती की तड़प किसने जानी.

वैसे मालूम नहीं दुनिया में कितनी किताबें है, फिर भी आम आदमी से दूर है क्यों? लेखनी हाथ की जिह्वा और नेत्र की मूक भाषा है. गोरकी ने कहा था अपने मित्रों से कहो जो तुम्हारे लिए साहित्य लिखते है कि गॉव के लिए भी लिखें और ऐसा लिखें कि सब मैदान में आकर देश पर मरने के तैयार हो. ऐसा साहित्य सच्चा साहित्य होता है और सच्चा साहित्य सदा अमर रहता है.

इस संदर्भ में मैं कहना चाहूँगी कि पढ़े-लिखों के लिए सब लिख देते है. हमें कम पढ़े लिखें, गरीब के लिए रचना होगा.

हम तो वह कवि है, जो बादलों में भी घर बना लेते हैं

इतनी ऊंची उड़ान है कि, परिन्दों को भी एहसास करा देते है।

समुन्द्र में उठती लहरो पर भी, अपने पैरों के निशान बना देते हैं।

दिल में पैठकर उसके दिल के दर्द, अपने दिल में समां लेते है।

सौ वर्ष पहले गुलेरी ने कहा था, 'हिन्दी के बिना हिन्द नहीं.' महात्मा गांधी ने कहा था-'जाओं अपने लोगों को कह दो कि गांधी को अंग्रेजी नहीं आती, क्योंकि अंग्रेजों को ही तो उसे भारत से निकाला है. लेकिन आज कल तो नए लेखकों को बिल्कुल बेकार समझा जाता है, मुझ अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि हमारे समाज में, हमारे साहित्य में राजनीति की पैठ गहरी होती जा रही है. प्रकाशक बड़ा सा मुंह बनाकर नामी-गिरामी लोगों की किताबें छापने से फुरसत नहीं है कहकर नए लेखक को टाल देता है या बहुत बड़ा सा बिल बना कर उसके आगे रख अपने आपको बहुत बड़ा सिद्ध करना चाहता है हर लेखक के पास पैसा नहीं होता और यह भी जरुरी नहीं है कि जिसके पास पैसा न हो उसके पास बुद्धि नहीं होती.

ऐसा साहित्य परोसना हमारा, यानि लेखक का धर्म है लेकिन साहित्य को समाज के लिए रचना तो लेखक का धर्म है इस धर्म को आगे ले जाने में साथ देना है, प्रकाशक ने और सरकार ने और हिन्दी की संस्थाओं की इसमें बहुत बड़ी भागीदारी होनी चाहिए जो काफी हद तक हिन्दी अकादमी बखूबी निभा रही है, और मुझे उम्मीद है कि आगे भी निभाती रहेगी. लेकिन प्रकाशकों को चाहिए केवल वह अपना लाभ न सोच कर जो अच्छा साहित्य हो उसे छापने में लेखक को सहयोग देना चाहिए.

लेखक समाज से ही तो लेता है और समाज को ही देता है. समाज से उसका आदान-प्रदान चलता है. लेखक के लिए सत्य-असत्य, पक्ष-प्रतिपक्ष, सकारात्मक-निषेधात्मक सब कुछ समाज की सतह पर मौजूद है. उसे पेश कैसे करना है. यह एक अच्छे लेखक और सशक्त कलम पर ही निर्भर करता है.

<ins>नई दिल्ली</ins>

पत्रिका के सौवें प्रकाशन पर सभी पाठ्को को हार्दिक बधाई

हारुन रसीद अश्क

पटना, बिहार

जानकारी

दक्षिण भारत में हिन्दी के बढ़ते चरण

एस.बी.मुरकुटे, बड़गाव, कर्नाटक

संविधान के अनुच्छेद ३४३ के द्वारा हिन्दी को संघ की राजभाषा कहा गया है और उसके स्वरुप के संबंध में अनुच्छेद ३५१ में आदेशात्मक निर्देश दिए गए है. संविधान की अनुसूची में जिन २२ स्वदेशी भारतीय भाषाओं को मान्यता दी गई है उनमें हिंदी भाषा ही है, जो बारह प्रदेशों की राजभाषा है. संविधान के अनुच्छेद १२० में जहां संसद में प्रयोगार्थ भाषा का उल्लेख है वहां भी हिन्दी को अंग्रेजी के समकक्ष रक्खा है.

आज हिन्दी भाषा का स्वरुप अखिल भारतीय हो गया है और वह भारत एवं भारतीयता की पहचान बन चुकी है, एवं दूरदर्शन, आकशवाणी तथा चल-चित्रों ने इसे सारे देश की जनभाषा बना दिया है.

दक्षिण भारत की संज्ञा भारत के दक्षिण भू-भाग को दी जाती है, जिसमें केरल, कर्नाटक, आंध्र एवं तमिलनाडु राज्य तथा संघ शासित प्रदेश पाडीचेरी शामिल हैं. केरल में मलयालम, कर्नाटक में कन्नड़, आंध्र में तेलगु और तमिलनाडु में तथा पाडिचेरी में तमिल अधिक प्रचलित भाषाएं है. दक्षिण की इन चारों भाषाओं की अपनी अपनी विशिष्ट लिपियां है. शब्द भंडार, व्याकरण तथा समृद्ध साहित्यिक परंपरा भी है.

स्वाधीनता आंदोलन में देश में भावात्मक एकता स्थापित करने में हिन्दी को सशक्त माध्यम मानकर इसके प्रचार के लिए कई प्रयास किए गए. तमिल के सुख्यात राष्ट्रकवि सुब्रहण्यम भारती ने अपने संपादन में प्रकाशित तमिल पत्रिका 'इंडिया' के माध्यम से १९०६ में ही जनता से हिन्दी सीखने की अपील की थी एवं अपनी पत्रिका में हिन्दी में सामग्री प्रकाशित करने हेतु कुछ पृष्ठ सुरक्षित रखने की घोषणा की थी.

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली, भारत सरकार द्वारा १५ फरवरी से २५ फरवरी २००८ कल्पाक्कम इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केन्द्र में हिंदीत्तर भाषी लेखक शिविर को उपस्थित था. मैंने वहा देखा कि हिंदी को विरोध नहीं है. तमिल लोग बड़ी दिलचस्पी से हिंदी सीखना चाहते है. वहॉ के वैज्ञानिकों ने हिन्दी में अच्छे प्रोजेक्ट तैयार किये हैं. डॉ. बालशौरी रेड्डी, डॉ. मधू धवन, डॉ. एम.शोषन, श्रीमती लावण्या, डॉ. जे पदमप्रिया, संजय जोशी आदि हिंदी लेखक है.

तमिल हिंदी साहित्य अकादमी की स्थापना हुई है. डॉ० बालशौरी रेड्डी उसके अध्यक्ष है. तमिलनाडु के मुख्यमंत्री करुणानिधि की बेटी राज्यसभा सांसद कनिमोझी भी आज तक हिंदी सीख रही है. कनिमोझी को हिन्दी सीखने में जयंती नटराजन से मदद मिल रही है. चंदबाबू भी हिंदी सीख रहे हैं. वे आजकल रोज दो हिंदी अखबार पढ़ते है. वे उत्तर प्रदेश के इटावा और आजमगढ़ में किसानों की रैलियों को हिन्दी में संबोधित कर चुके है.

आध्रप्रदेश, हैदराबाद में विवरण पत्रिका, दक्षिण समाचार, गोलकोंडा, अहल्या, मिलिंद आदि हिंदी पत्रिका प्रकाशित हो रही है. दक्षिण समाचार के संपादक मुनींद्र जी का हिंदी कार्य सराहनीय है. २००१ में उनका कार्य मैंने स्वयं ऑखों से देखा है.

हैदराबाद में हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद, हिन्दी प्रचार सभा, जहीराबाद तथा अन्य हिंदी स्वेच्छिक संस्था हिंदी प्रचार प्रसार का कार्य रही है. आंध्र प्रदेश हिंदी साहित्य अकादमी है. डॉ० विजय राघव रेड्डी उसके अध्यक्ष है. अकादमी द्वारा हिंदीतर भाषी हिंदी लेखक, कवियों का सम्मान किया जाता है. विविध गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है.

केरल में ही हिंदी का प्रचार प्रसार जारी है. पय्यनूर में हिंदी विषय लेकर डिग्री प्राप्त की जाती है. पय्यनूर कॉलेज में २००५ को केन्द्रीय हिंदी निदेशालय नई दिल्ली, भारत सरकार के हिंदीत्तर भाषी लेखक शिविर में उपस्थित था.

केरल में भी हिंदी भाषा का प्रसार प्रचार हो रहा है. हिंदी फिल्मों की बड़ी मांग है. केरल भारती नामक हिंदी पत्रिका निकलती है. केरल हिंदी प्रचार सभा तथा अन्य स्वैच्छिक संस्था हिंदी कार्य कर रही है.

१९१८ में हिंदी साहित्य सम्मेलन का कार्यालय मद्रास में खुला था. आगे वह दक्षिण भारत हिंदी प्रचार से प्रचारित है. दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के चारों राज्यों में शाखाओं के अलावा उच्च्य शोध संस्थान भी है. इसके द्वारा उच्च्य शिक्षा एवं शोध की औपचारिक उपाधियॉ प्रदान की जाती है.

कर्नाटक में कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, बेंगलौर, सुश्री बी.एस.शांताबाई द्वारा हिंदी परीक्षा में तथा हिंदी बी.एड. कॉलेज चलाये जाते है. बंगलौर में नवंबर०८ को उस संस्था का ३५वॉ पदवीदान समारोह में उपस्थित था. हिंदी प्रचारक, हिंदी साहित्य में दिलचस्पी से कार्य कर रहे हैं.

छत्तीसगढ़ टुडे के संपादक जगदीश यादव जी के दक्षिण भाषाओं का उच्च्य साहित्य हिंदी में अनुवाद करके, तमिल, मलयालम, कन्नड़, तेलगू विशेषांक प्रकाशित किये हैं. उनका कार्य सराहनीय है. दक्षिण भारत में हिंदी भाषा भविष्य उज्जवल है.

कहानी

दिखावा

✍शबनम शर्मा, हि. प्र.

वो बुत सी बनी मेरे सामने बैठी मुझे एकटक ताक रही थी। उसके तन के कपड़े, उसकी आँखें न कहकर भी सब कुछ बयान कर रहे थे। ''रीना'' मेरी आवाज़ से वो चौंकी। ''कैसी हो? कितने दिनों बाद आना हुआ?'' ''आँटी, वो लोग भेजते ही नहीं, घर का सारा काम, बाबूजी की बीमारी, इनका ऑफिस सब मुझे ही करना है।'' ये कहकर वह शून्य में ताकने लगी। मैं कुछ सोचने पर मजबूर हो गई, २ साल पहले मैं रीना की शादी में गई थी। क्या शादी थी। बारातियों को चाँदी की प्लेट भेंट में दी गई। उन्हें शहर के सबसे मंहगे ५ सितारा होटल में ठहराया गया। खाना भी वहीं खिलाया गया। बैड, दहेज किसी में भी कमी नहीं की गई। ६०-६० हज़ार की साड़ियाँ, जेवर क्या नहीं दिया अपनी बेटी को। बाद में पता चला कि उन्होंने ५०-५५ लाख रूपया शादी में खर्च किया।

''रीना तुम मुझे खुश नहीं लगती'', ये कहकर मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लिया। उसका हाथ पकड़ते ही वह फूट पड़ी। बोली, ''आँटी इतना दिखावा, न करके अगर मम्मी-पापा मेरे नाम कुछ कर देते तो अच्छा था। आज वो लोग हर दिन नई डिमान्ड रखते हैं। मुझे एक रूपया भी नहीं देते। सब बातों पर अंकुश है। मैं सुबह से शाम तक काम करती हूँ, सबको खुश करने की भरपूर कोशिश करती हूँ। हर बात में ताने, बड़े घर की बेटी है। ऊपर से मेरे पापा ने २ तक पढ़ाया ये सोचकर कि मेरी बेटी को पढ़कर कौन सी नौकरी करनी है, आँटी, हर बात के लिये मुझे सास का मुँह देखना पड़ता है और फिर वो चाहें तो १००-२०० रूपये की बकशीश दे दें वरन् उनका मुँह ताकती रहूँ। नौकरी कर नहीं सकती, पति घर से बाहर जाने नहीं देता, मम्मी-पापा को फोन कर नहीं सकती। आप मम्मी की हालत देखिए कैसी हो गई। आँटी, दिखावा न करके हमेशा अपने बच्चे के भविष्य के लिए सोचना चाहिए।''

ये कहकर वो बुरी तरह रोने लगी।

+++++++++++++++++++++

कसौटी

हस्पताल के चारों ओर भीड़ थी। शहर में भी जितने मुंह उतनी बातें। अजय अपने माँ-बाप का इकलौता पुत्र था, ४ बहनें थी, २ अजय से बड़ी और २ छोटी। उसने आत्महत्या कर ली थी। माँ ने सुबह उसे नाश्ता दिया, पिता ने उससे बातचीत भी की थी ड्यूटी पर जाने से पहले। पर क्या बात थी जो उसे इतने बड़े निर्णय पर ले आई थी। पोस्टमार्टम हो रहा था। रिर्पोट आई, लाश घर के लिये दे दी गई। सबकी समझ से बाहर था कि क्या हुआ?

अजय अच्छा लड़का था। सदैव हंसमुख, मेहनती, परन्तु कभी-कभी वो अपना कमरा बंद करके बैठ जाता था। लाश को जलाने के बाद सब घर आए। उसकी एक-एक चीज़ की छानबीन की गई। उसकी पीली कमीज़ जो उसने कल रात पहनी थी, में से एक पत्र निकला, जिसमें लिखा था ''पिताजी मैं आपकी इच्छा पूरी नहीं कर सकता, आप मुझे आई.एस. अफ़सर बनाना चाहते थे, मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है, मैं एक अध्यापक बनना चाहता हूँ, आप ये बात सुनना भी नहीं चाहते, आपने मुझे इसे पूरा करने के लिए बहुत कोशिश की, परन्तु मैं आपका ये सपना पूरा न कर सकूँगा। अच्छा, पापा मुझे माफ़ कर देना, सोचता हूँ अगले जन्म में आपका बेटा बनूँ और आपकी कसौटी पर खरा उतरूँ। आपका बेटा अजय।''

बुआ

नीरज मेरी सहपाठिन है, पिछले महीने दो बच्चों को लेकर वो मेरी कक्षा में आई। मुझे उसे पहचानने में कुछ समय लगा। पर मैंने पहचान लिया। मैंने उसे कुर्सी दी, हाल-चाल पूछा। उसे देखकर लग रहा था उसका पति नहीं है चेहरा बेरौनक, उदास। मैंने आखिर हिम्मत जुटाकर उससे पूछ ही लिया, कि उसने इतनी देर से विवाह क्यूँ किया कि बच्चे अभी कक्षा २-३ में ही हैं। वो बेमना सा हँस दी। फिर बोली, ''किसकी शादी, किसके बच्चे। तुझे तो याद ही है माँ तीर्थ पर गई थी तब मर गई, पिताजी भी ये सब सहन न कर पाये, बिस्तर पकड़ लिया। मैं बड़ी थी, उनकी सेवा करती रही, फिर पिताजी चल बसे। भाभी अमीर घर की लड़की है कभी काम न करती। छोटी बहनों व भाई के लिये खाना बनाना, स्कूल भेजना, घर समेटना, माँ वाली सारी ड्यूटी मेरे सिर पर आ गई। बहनों की शादी जैसे-तैसे कर दी। वक्त का पहिया मुझे इस मोड़ पर ले आया कि इस घर ने मुझे जकड़े रखा और शादी की उम्र निकल गई। भाभी ने कभी चाहा भी नहीं और कोशिश भी नहीं की कि मेरी शादी हो। इसे देख, दुनिया भर का शरारती है मेरे गले में डाल दिया, लड़की को भी परसों इस स्कूल में दाखिल कराकर, मुझे एक कमरा, रसोई किराये पर दिलाकर, इनकी पढ़ाई व ज़िन्दगी का वास्ता देकर खुद उस हवेली में चले गये। पहले बहन-भाईयों का किया अब इनका करना पल्ले पड़ गया, क्या करूँ किसमत है। ये कहकर वो फूट-फूटकर रोने लगी।''

लेखको से निवेदन

कृपया अपनी लघु कथाएं किसी भी सामाजिक विषय को लेकर लिखी गई ही भेजें, **संपादक**

व्यक्तित्व

थिएटर की दुनिया के उभरते सितारे: प्रमोद पाठक

बेदुपुरा, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश में जन्में प्रमोद पाठक १९९६ में मुंबई में थियेटर से जुड़े हुए है. थियेटर की दुनिया में एक्टिंग, लिखने, निर्देशन और कई अन्य गतिविधियों से जुड़े श्री पाठक १५ से भी अधिक नाटकों में एक्टिंग किए है.

श्री पाठक ने सुनील शानबाग, रामु रामनाथन, विनोद रंगनाथ, पं० सत्य देव दुबे, तोबी गौघ के संरक्षण में कार्य करने का मौका मिला. गत १० वर्षो से शैक्षणिक संस्थाओं, कारपोरेट हाउसेस, एन.जी.ओं में थियेटर के वर्कशाप भी करवा रहे है. अभी हाल ही में अन्तर्राष्ट्रीय प्रोडक्शन 'मचेन्ट ऑफ वालीवुड' के माध्यम से यूरोप, दक्षिण अफ्रिका और आस्ट्रेलिया में करीब ६०० शो करके अभी हाल ही में लौटे है. गत वर्ष अनुराग कश्यप द्वारा निर्देर्शित 'प्रमोद भाई २३' टेलीफिल्म की शुटिंग पूरी की है. टेलीफिल्म खग्गाम को लिखा और निर्देशित भी किया है.

स्टेज प्रोड्क्शन आशुतोश दत्तर के निर्देशन में महरुम की याद में, सुनील शानबाग के निर्देशन में दो क्यू में, साईकिल वाला, अरे मायावी सरोवर, गरम कमरा, काटन ५६ पालिस्टर ८४ विनोद रंगनाथ के निर्देशन में टैक्स फ्री, स्वयं के निर्देशन में कुट्टी, मोचीराम, रामू रामनाथ के निर्देशन में अंगस्त अंगस्त कुठ कुंठ बुम बाम धनधाल धमाल कपुट, संजीवनी सुपर सो, टकसदूम टकादीस, सत्य देव दुबे के निर्देशन में बड़े भाई साहब, इंशा अल्लाह, सुदामा के चावल में काम कर चुके है. श्री पाठक ने अनुराग कश्यप के निदेशन में बनी फिल्म प्रमोद भाई २३, रोहित नायर के निर्देशन में सुन जरा, मार्केन्ड देश पाण्डे के निदेशन में दानव, राहुल ढोलकिया के निदेशन में परजानिया, राज कुमार संतोषी के निदेशन में लिगेंड आफ भगत सिंह फिल्मों में भी काम किया है. इसके साथ ही साथ टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साईन्सेज, पृथ्वी थियेटर समर वर्कशाप, इक्सप्लोरर्स, इक्सपरेटिया, आदि संस्थाओं का थियेटर वर्कशाप भी किया है.

ग़ज़ल

सरे-महफ़िल मुहब्बत की ग़ज़ल गाया नहीं करते
जुबॉ पर बात दिल की इस तरह लाया नहीं करते।
नज़र-नागिन जिसे डस ले वो मांगे ही नहीं पानी
यूँ सजधज कर निगाहे-शौक़ में आया नहीं करते।
मिला कुछ राज़ दुनिया को तो रुसवाई बहुत होगी।
ख़ते-ज़ाती बदस्ते-ग़ैर भिजवाया नहीं करते।।
दब अब तो राह तकते-तकते ऑखों में उतर आया
मेरे दिलबर यूँ वादा करके तरसाया नहीं करते।।
संभलते हैं क़दम राहों में लाखो ठोकरें खा कर।
है जिनको चाह मंज़िल की वो घबराया नहीं करते।।
सितारे लाख चमकें आस्मॉ में चॉद बिन लेकिन।
जमीं पर चॉदनी रातों को छिटकाया नहीं करते।।
तुम्हारी आरजू इक आग-सी सीने में पलती है
किसी के मोम-से दिल को यूँ झुलसाया नहीं करते।।
वो आयेंगे मगर आ कर भी ज़ख़्मों को कुरेदेंगें
दवा बन कर कभी 'कमसिन' वो क्यूँ आया नहीं करते

कृष्णा कुमारी 'कमसीन', कोटा, राजस्थान

क्षणिकाएं

जब जब भी हम
राष्ट्रधर्म से पीछे
हटे है
तिनके की तरह
बंटे है
राम जाने, हम
इतिहास से सबक,
क्यों नहीं लेते
देखिये न,
जितने भी
स्वर्णमृग है,
सब, मारीच से
छंटे है।

२.

तुम,
बहुरुपिये हो
अपने आदिम
चेहरे पर
कला, संस्कृति
सभ्यता का
नकली मुखौटा चढ़ाये
सबको ठग रहे है
औ जब, जहां भी
अवसर पाते है
मुखौटा नोचकर
फिर वही वहशी
बन जाते है।

हाइकु

चुनावी ज्वर,
हकीम परेशान
नुस्खा ढूढते।
रास रंग में
फिसलती ही गई
मुट्ठी की रेत।

आनन्द बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

स्नेह बाल मंच

मॉ

भगवान का रुप होती है मॉ
जीवन हमको देती है मॉ
दया-ममता की मूरत है मॉ
सब रिश्तों में खूबसूरत है मॉ
भावों का सागर है मॉ
अमृत का गागर है मॉ।
प्यार ही प्यार भरा है मॉ के दिल में
खुशियॉ ही खुशियॉ है मॉ के ऑचल में
ममता भरी छॉव है मॉ
करुणा त्याग का भाव है मॉ
पथ जीवन का हमें बतलाती मॉ
अच्छे संस्कार हमे सिखलाती मॉ

मॉ से है यह जीवन सुहाना
मॉ के बिन जग है सूना
प्रकृति का अनुपम उपहार है मॉ
हमारे जीवन की पालनहार है मॉ

मॉ जैसा जग में कोई नहीं है दूजा
ईश्वर से पहले करो मॉ की पूजा
भगवान का रुप होती है मॉ
जीवन हमको देती है मॉ
प्यार ही प्यार भरा है मॉ के दिल में
खुशियॉ अपार है मॉ के ऑचल म

कैलाश चंद्र जोशी, औरैया, उ०प्र०

गृह मंत्री होता

मम्मी मैं गृह मंत्री होता
नहीं चैन से घर पर सोता।
बच्चों का एक दल बनवाता।
जो बार्डर पर गश्त लगाता।
आतंकी यदि घुसने लगता,
जमकर खूब पिटाई खाता।
वह घर जाकर अपने रोता,
मम्मी मैं गृह मंत्री होता।
सीधे पहुॅच फ्रन्ट पर जाता,
सेना का उत्साह बढाता।
सुनता सब कठिनाई उनकी,
सभी परिस्थिति ठीक कराता।
अवसर नहीं मैं कोई खोता,
मम्मी मैं गृह मंत्री होता।
नियम बहुत मैं सख्त्ा बनाता,
पनप नहीं आतंकी पाता।
राष्ट्र प्रेम हर बच्च्ा करता,
राष्ट्र द्रोह सपना हो जाता।
नया देश एक निर्मित होता,
मम्मी में गृह मंत्री होता।

डॉ० राज किशोर सक्सेना 'राज',
उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को इस अंक में चाचा कैलाश चन्द्र जोशी, डॉ० राज किशोर सक्सेना, व चित्रांशी दीदी की कविताएं पढने को देती हूॅ.आप लोगों को पसंद आये तो अपनी बहन को जरुर लिखिएगा.

आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

वह कण-कण है चंदन

जहां जन्म लिया तूने, वह कण-कण है चंदन
हे भारत वीर सुनो, शत-शत तेरा वंदन।
कहीं आंख का सूनापन कहीं बचपन रोता है।
एक ओर दिया बुझता, कहीं आंचल जलता है।।
हे भारत मां के लाल, तुझको अर्पण तन-मन।
हे भारत वीर सुनो, शत्-शत् तेरा वंदन।।
हम चैन से सोते हैं, तुम प्रहरी बन जगते।
दुश्मन के कदम पर तुम, पैनी सी नजर रखते।
हे वीर तेरे पथ को, करती हूॅ सदा मैं नमन्।
हे भारत वीर.....शत् शत्.....वंदन।
यूं तो सब जीते है और जीकर मरते है।
कुछ बैठ महल भीतर, दिन रात सवंरते है।।
कोई कितना संवर जाये, पर तुझ सा नहीं सुंदर।
हे भारत वीर सुनो..., शत् शत् ....वंदन।
तुम शान तिरंगे की, अभिमान से लगते हो।
संगीन पकड़कर तुम, जब शान से चलते हो।
गौरव इस माटी के, शत्-शत् तेरा अभिनंदन।
हे भारत वीर सुनो, शत् शत् तेरा वंदन।
मां की रक्षा के लिये, तुम प्राण लुटा देते।
चिर निद्रा में सोकर, मुस्कान सजा देते।
तेरे बलिदानों पर, झुक जाये समूचा वतन।
हे भारत वीर सुनो, शत्-शत् तेरा वंदन

चित्रांशी श्रीवास्तव, (कक्षा-०६), रायबरेली, उ.प्र.

कविताएं

ग़ज़ल

फैंले हैं अँधेरों के हामी, वादी में उजाला कौन करें।
बन्दूक हैं जिनके हाथो में, उनसे समझौत कौन करे?
हालात के बिगड़े चेहरे पर, कुदरत की नज़र तो पड़ने दो।
हो जाएगा सब कुछ पहले-सा पर इसका चर्चा कौन करें?
सब चाहते हैं आसानी से मिल जांए ज़माने की खुषियां।
रिश्वत का चलन जब आम हुआ मेहनत पे भरोसा कौन करें?

तफ़रीक़ मिटे, ना पैद हो गम हर सम्त सजे बस्ती अपनी।
पर सोच रहीं हूँ मैं पैहम, ये काम अनोखा कौन करें?
वो सच का दावेदार बड़ा हर कोई उसके साथ मगर।
इस झूठ के जंगल में आख़िर उसका क़द ऊंचा कौन करें?
सर सब्ज़ बदन पर हमले से हर ओर मची हैं चीख-पुकार।
ये कहने वाला कोई नहीं बस्ती में ऐसा कौन करें?
जब 'राज' मुक़द्दर में सहरा, सहरा की गर्म हवांए है
मिल जांए धनेरी छांव मुझे फिर ऐसी तमन्ना कौन करें?

डॉ. राजकुमारी शर्मा 'राज', गाजियाबाद, उ०प्र०

पर्यावरण

जहर हवा में छोड़ते, तनिक नहीं संकोच
जीवन दूभर हो रहा, बदलो अपनी सोच।।
प्रतिदिन बढ़ता जा रहा, भूमण्डल का ताप।
अनियोजित उद्योग हैं, जीवन का अभिशाप।।
सुविचारित होते नहीं, परीक्षण व विस्फोट।
पर्यावरण पर हो रही, जान बूझकर चोट।।
क्षरण हुआ ओजोन का, अंतरिक्ष तक घात।
सागर में भी जा रही, जहरीली सौगात।।
कविताओं में रह गया, शीतल सुखद समीर।
वन काटे छोड़ा धुआं, वायु मलिन गंभीर।।
हरियाली दुर्लभ हुई, बंजर हुई जमीन।
वाहन भवन उद्योग में, मानव है तल्लीन।
लगे रहे हम खनन में, नद पर्वत भूगर्भ।
जलवायु मनोरम छटा, विनष्ट हो रहा सर्व।।
मिट्‌टी भी अब क्षुब्ध है, किया हाल बेहाल।
रसायन घातक जहर, देते उसके लाल।।
पर्यावरण की चेतना, सामूहिक दायित्व।
जलवायु संरक्षित रहें, ये हैं जीवन तत्व।।
तेज दौड़ती जिंदगी, घातकता की ओर।
ध्यान नहीं परिणाम का, कान फोड़ता शोर।।
भूजल दुर्लभ हो रहा, सरितायें जल हीन।
फिर भी हम सोते रहे, जल बिन होंगे दीन।।
नदियॉ जीवन दायिनी, बहता निर्मल नीर।
जहरीला उनको किया, मन में होती पीर।।
कुआं पोखरा हो रहे, बिन जल अब बेकार।
जल संचय होता नहीं, दोहन का विस्तार।।
तालाबों पर अतिक्रमण, भवनों का विस्तार।
जल संचय बाधित हुआ, कैसे हो निस्तार।।
भूजल की उपलब्धता, जल संचय आधार।
वर्षा का जल रोकिये, नहीं जाम बेकार।।
वनस्पति में नहीं रहा, कुछ का नाम निशान।
घटती जन्तु प्रजातियां, खतरे का ऐलान।।

कैलाश त्रिपाठी, अजीतमल, औरैया, उ.प्र.

ग़ज़ल

खिड़कियों के झरोखें के अन्दर से हम
देकर आवाज तुमको बुलाते रहे,
पीछे मुड़कर मगर तुमने देखा नहीं
तेज रफ्तार से पग बढ़ाते रहे। खिड़कियों.
दिल की बेचैनियों बढ़ रही थी मेरे
फिर भी नज़रों से नज़रे छुपाते रहे
मन में आशा थी अब भी लौट आओगे
पर निराशा के संकेत आते रहे. खिड़कियों...
कब तलक तुम मुझे ऐसे तड़पाओगे
ऑसू इस सोच में हम बहाते रहे,
आशा अब तक लिए थे, जो अपने लिए
सारे सपनों पे पानी फिराते रहे, खिड़कियों...
फिर भी विश्वास को हमने खोया नहीं
लेकिन उसको भी तुम ठुकराते रहे
पाओगे चैन दुनियां में तुम भी नहीं
गुप्त कहते अगर दिल दुखाते रहेखिड़कियों...

अशोक कुमार गुप्ता, इलाहाबाद

अदालत

पुलिस द्वारा झूठ को सच
तथा
वकील द्वारा सच को झूठ
'अदा' करने की
जहॉं लत लग जाती है
'अदालत' कहलाती है। **उमाशंकर दुबे**'मनमौजी, भोपाल

कहानी

दिल्ली: भूल भुलैय्या

✍ रवि शर्मा, दिल्ली

एक दिन दोपहर में, खाना खाकर बैठा ही था अचानक गॉव से मामाजी आ पहुँचे. बड़े बौखलाए हुए, क्रोधित मुद्रा धारण किए हुए. दनदनाते हुए बोले, “तुझे तीस साल हो गए दिल्ली में रहते. मगर न तो कोई तेरा नाम जानता है न काम. मैं तेरे मकान नंबर वाली पर्ची घर पर ही भूल आया. सोचा था कि किसी से भी पूछ लूँगा तेरा नाम लेकर; आखिर भारत सरकार में अफसर है मेरा भॉजा. मगर मुझे क्या मालुम था कि तू इतना मामूली आदमी है कि तुझे तेरे पड़ोसी तक नहीं जानते. और एक हम हैं, गॉव में घुसते ही किसी से मेरा नाम ही ले दो, घर तक पहुँचा कर जाएगा, घर तक. एक घंटे से इसी कालोनी में घूम रहा हूँ. वो भला हो डाकिये का, जो तुझे जानता था और उसने मुझे यहॉ तक पहुँचा दिया वरना मुझे तो वापिस गॉव ही जाना पड़ता.” मुझे इस बार दिवाली पर डाकिये को दिए ५१ रुपये सार्थक नजर आए क्योंकि उस दिन पहली बार डाकिए से कुछ व्यक्तिगत बातचीत भी हुई थी, जिसमें उसने मेरे दफ्तर, काम आदि के बारे में पूछा था.

मैं सोचने लगा, ‘दिल्ली भी अजीब है. यह भारत की राजधानी, देश का दिल, दुनिया का महत्वपूर्ण महानगर है, जो महानगर की तमाम अच्छाइयों-बुराइयों को अपनपे में समेटे है. यहॉ कोई किसी को न जानता है न पहचानता है. कहीं कॉलोनी के नाम मिलते जुलते है, तो कहीं कालोनी के भीतर सेक्टर, पॉकेट, ब्लाक के चक्कर. आपने कई बार देखा होगा कि कोई व्यक्ति दूसरे से किसी कॉलोनी, मकान या व्यक्ति के बारे में पूछ रहा है. ऐसे ही, एक बार हमें जनकपुरी में, उस दिन हमें सारी दुनिया-जहॉ दिखाई दे गई, मकान ढूँढते-ढूँढते दिन में तारे दिखाई दे गए और छटी का दूध, मेरी स्वर्गवासी नानी खूब याद आई. दरअसल हुआ यूँ कि मकान का नं. सी १ए/१२८ बी था मगर हमने अपनी डायरी में से सी ४ए/१२८ बी नोट कर लिया. बस फिर क्या था-यहॉ से वहॉ, इधर से उधर भटकते रहे. किसी ने ऑखे दिखाई तो किसी ने बत्तीसी.

यह तो गनीमत थी कि हमें जनकपुरी जाना था और हम जनकपुरी ही गए. मगर कभी-कभी लोग आजादपुर जाने की बजाय आजाद नगर या आजाद मार्किट पहुँच जाते है. आपको जाना था नई दिल्ली रेलवे स्टेशन और पहुँच गए पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन. शकरपुर और शकूरपुर पढ़ने-सुनने में भले ही एक से लगें, मगर जब आप शकरपुर की जगर शकूरपुर पहुँच जाएंगे तभी इनका अंतर समझ आएगा. तिलक नगर-तिलक, ब्रिज-तिलक बिहार, तिलक मार्ग, गणेश नगर-गणेश पुरा, कमला नगर-कमरा मार्किट, रानी बाग, महारानी बाग, गोविंद पुरी गोविंद पुरा, इंद्रा नगर-इंद्रा कॉलोनी-इंद्रा बिहार, कृष्णविहार-किशनगंज, में तो फिर भी लिखने-पढ़ने सुनने में थोड़ा बहुत अंतर है, मगर संत नगर, श्री नगर, महेद्रापार्क आदि का क्या करें जो एक से अधिक जगह स्थित है. एक संत नगर ग्रेटर कैलाश के पास है, तो दूसरा बुराड़ी के पास और तीसरा सरस्वती बिहार के पास. इसी प्रकार, एक श्रीनगर कश्मीर में है दूसरा दिल्ली में शक्तिनगर के पास और तीसरा दिल्ली में ही ब्रिटेनिया के पास. एक महेन्द्रापार्क रानी बाग के पास है, तो दूसरा सराय पीपलथला के पास.

दिल्ली वासी तो फिर भी इन मिलते जुलते नामों वाली दिल्ली की भूल-भुलैय्या से सावधान रहते है, मगर दिल्ली में बाहर से प्रतिदिन आने वाले हजारों लोगों के लिए तो नामों का यह गोरखधंधा मध्ययुगीन रहस्यवाद से भी अधिक रहस्यपूर्ण है. मेरे एक मित्र के साथ तो एक बार अति ही हो गई थी. अंतर्राज्यीय बस अड्डे के पास वे उतरे. उतरकर एक स्कूटर वाले को रोका. दरअसल उन्हें जाना था लोनी (जो दिलशाद गार्डन की तरफ दिल्ली उत्तर प्रदेश सीमा पर स्थित है.) और स्कूटर वाले को सुन गया रोहिणी. स्कूटर वाले ने बस अड्डे से स्कूटर दौड़ाया और रोहिणी के पास पहुँच कर बोला, ‘किस सेक्टर में जाना है साहब?’ इस बीच मेरे मित्र ‘लोनी’ काा इतना जबरदस्त विकास

होली

आओ होली मनाये हम सब
भाई बहनें मिलकर रंग सजादा अब
मन की काम क्रोध दूर करें सब
प्यार ममता पाना है अब।
देखो रोको अन्याय अत्याचार
रंग-विरंगे कपड़े पहने
दिल में भावना एक होने
सबमें समानता पाने आगे बढ़ते जाने।
हिंसा विस्फोट न करो
प्रकृति को देखो सेवा करो
बड़ों को गौरव देना सीखो
देश पर भी अभिमान रखो।
तब गौरव बढ़ता है देखो
सब प्यार से मिलन सीखो
समान है भगवान के सामने
ये समझो अपने आप तुमने।

जे.वी.नागरत्नम्मा, कर्नाटक

देखकर दंग रह गए. वे बचपन में एक बार लोनी आए थे, उसकी धुंधली-सी एक तस्वीर उनके दिमाग में थी. मगर जब असलियत खुली तो बहुत झुंझलाएं और लगे स्कूटर वाले पर बिगड़ने. लोगों ने बीच-बचाव किया और वे किसी तरह लोनी पहुँच पाए. तब से मैंने नियम बना लिया कि मेरा कोई भी मित्र जब भी दिल्ली आने की योजना बनाता है, तो मैं उसे दिल्ली की भूल-भुलैयूया के बारे में पहले से ही आग्रह कर देता हूँ, ताकि वह परेशान न हो.

तो अगली बार आप को जब भी दिल्ली की किसी कॉलोनी में जाना हो, तो ठीक-ठाक मकान नंबर, कॉलोनी का नाम, पॉकेट, ब्लाक, सेक्टर आदि जरुर नोट कर लें. किसी प्रसिद्ध संदर्भ स्थल को भी लिखना न भूलें. दिल्ली गॉव नहीं है कि नाम लिया और लोग घर तक पहुँचा आए. यहॉं तो कभी-कभी नीचे वाले को ऊपर फ्लैट में रहने वाले का नाम नहीं पता होता. अड़ोस-पड़ोस में जान पहचान भी सीमित ही होती है. हॉं, यदि सही मकान नं०, सेक्टर आदि पता है, तो ठीक है, वरना रोणी, जनकपुरी, वसंत कुंज, द्वारका, रामकृष्णपुरम, आदि में किसी व्यक्ति का घूर ढूंढना टेढ़ी खीर ही है.

सौवें अंक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई

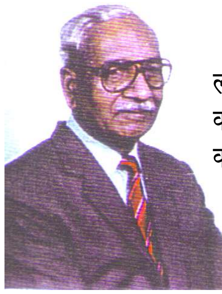

श्याम लाल उपाध्याय

मंत्री, भारतीय वाङमय पीठ

लोकनाथ कुंज, १२७/ए/८, ज्योतिष राय रोड, यू अलीपुर, कोलकाता, पिन-७०००५३, दू० आ०-०३३-२४०३२४६५, का०:२४०००८४५ मो० ६८३६२१२८१३

१ मार्च १६३१ को औंदी, बलिया, उ.प्र. में जन्में प्रो. श्यामलाल उपाध्याय परास्नातक-हिन्दी साहित्य, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से किए, टी.टी.सी., लोरेटो कॉलिज, कोलकाता, बी.एड., सेंट ज़ेवियर्स कॉलिज, कोलकाता से किए. सेंट जोसफ्स कॉलेज, कोलकाता के पूर्व हिन्दी प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, रहे चुके श्री उपाध्याय मौलाना आजाद कॉलिज, कोलकाता में अंशकालीक प्रवक्ता, आकूत साहित्यिक संस्था, कोलकाता के मंत्री, आकूत साहित्यिक पत्रिका, कोलकाता के सम्पादक, भारतीय वाङमय पीठ, कोलकाता के संस्थापक एवं मंत्री, दक्षिण पूर्व रेलवे, वाल्टेयर के हिन्दी भाषा कार्यान्वयन समिति के पूर्व सदस्य, बोर्ड फॉर ऐंग्लो-इण्डियन, पश्चिम बंग के पूर्व सदस्य श्री उपाध्याय की काव्य विधा में नियति न्यास, नियति निक्षेप, बाल साहित्य- संक्षिप्त काव्यमय हिन्दी बालकोश, शोभा, सौरभ, सौरभ के स्वर प्रकाशित हो चुकी है तथा आप काव्य मंदाकिनी (२००४, २००५, २००६, २००७, २००८ एवं २००६) का सम्पादन भी कर चुके है.

आपकी काव्यमय हिन्दी बालकोश (सम्पूर्ण), नियति-निसर्ग, आस्था के अंकुर, दोहा संग्रह, हायकु संग्रह, भू-दर्शन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व यंत्रस्थ है.

काव्य, काव्यकथा, कथा, निबन्ध, समीक्षा, पत्र, परिचय, रपट एवं बाल साहित्य प्रकाश्य है.

काव्य, काव्यकथा, कथा निबन्ध, समीक्षा, परिचयात्मक आलेख, रपटें देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित

अनेकों संस्थाओं द्वारा आपको अनेकों सम्मान, सम्मानोपाधियों से अलंकृत किया जा चुका है.

दि.श्री रामस्वामी अयूयंगार जी का देहावसान

कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति के पूर्व मानद मंत्री का २३.०२.०६ को देहावसान हो गया.

५६ वर्षो तक समिति की सेवा, समिति के अनुभव संपन्न द्रष्टा, प्रशासकीय जानकार, समिति की भाषा-पीयूष मुख पत्रिका के संपादक रहे श्री रामस्वामी व्यक्तिगत स्नेहार्द रखने वाले, शांत मितभाषी थे. आपके परिजन को यह दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें और मृतात्मा को सद्गति प्राप्ति की प्रार्थना वि.रा.देवगिरी-प्रबंध मंत्री, कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति, बेगलोर,और गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद ने की है.

ज्योतिर्गमय एवं स्वप्निल का लोकार्पण

कवयित्रि कृश्णा कुमारी के निबंध संग्रह ज्योतिर्गमय एवं स्वप्निल कहॉनियॉ कहानी संग्रह का लोकर्पण एवं परिचर्चा का आयोजन काव्य मधुवन संस्था द्वारा किया गया. अध यक्षता वरिश्ठ साहित्यकार अरविन्द सोरल ने की तथा मुख्य अतिथि अम्बिका प्रसाद चतुर्वेदी रहे. प्रमुख वक्ताओं में शिवराम स्वर्णकार, महेन्द्र नेह, विजय जोशी, तथा रचनाकार अशोक गुप्ता थे. कार्यक्रम का संचालन कवि अतुल चतुर्वेदी ने किया. संग्रह के संबंध में वक्ताओं ने इसे विलुप्त होती लोक परम्पराओं, मान्यताओं, लोकगीतों, लोक कथाओं, उत्सवों, रीति रिवाजों, पौराणिक पात्रों के संदर्भ में गूढ़ जानकारी वाला बताया.

डॉ० तारा सिंह को साहित्य सेवा सम्मान

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, बिहार सरकार द्वारा २२ फरवरी २००६ पटना में आयोजित एक भव्य समारोह में, सुदीर्घ साहित्य सेवा के लिए मुंबई की डॉ० श्रीमती तारा सिंह को 'साहित्य सेवा सम्मान' से अलंकृत किया गया. सभाध्यक्ष प्रो० अरुण कुमार, सभापति, बिहार विधान परिषद एवं मुख्य अतिथि माननीय हरिनारायण सिंह, मानव संसाधन विकास मंत्री, बिहार के कर कमलों द्वारा प्रशस्ति पत्र, शॉल एवं पुरस्कार स्वरुप ११०००/-रुपये का ड्राफ्ट प्रदान किया गया.

१५ फरवरी २००६ को इलाहाबाद में आयोजित साहित्य मेला में ऑल इण्डिया ओमेन एसोसिएशन द्वारा द बेस्ट ओमेन ऑफ द इयर, अभिव्यंजना साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था कानपुर द्वारा काव्य कुमुद, जैमिनी एकादमी, पानीपत द्वारा महाराष्ट्र रत्न, आशा मेमोरियल द्वारा लेखक मित्र, शब्द सूर्य साहित्यिक संस्था, ग्वालियर द्वारा शब्द सूर्य अलंकरण से सम्मानित किया गया.

स्वर्ग विभा टीम की 'वरिष्ठ साहित्यकार डॉ0 तारा सिंह सम्मान 2009 योजना

विगत साल, २००८ की भाँति अपनी मर्यादा को कायम रखते हुए, सहित्यकारों की प्रिय वेबसाइट, स्वर्ग विभा टीम साहित्यकार बन्धुओं से निःशुल्क प्रविष्टि आमंत्रित करती है. निर्णायक समिति द्वारा चयनित विद्वानों को एक भव्य समारोह में 'तारा सम्मान-२००६ के परिपेक्ष में शाल, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, कुछ पुस्तकें एवं १५००/- रुपये नगद राशि से सम्मानित कर स्वर्ग विभा टीम स्वयं गौरान्वित होगी. अपनी प्रविष्ट्रियॉ ३० सितम्बर २००६ तक इस पते पर भेंजेः-

डॉ० बी.पी.सिंह, अध्यक्ष, स्वर्ग विभा, १५०२, सी क्वीन, हेरिटेज, प्लाट-६, से०१८, सानपाड़ा, नवी मुम्बई-४००७०५, महाराष्ट्र, मो० ०६३२२६६११६८

राजकुमार जैन को यशवंत सिंह स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार

चित्तौड़गढ़, के प्रसिद्ध बाल साहित्यकार राजकुमार जैन 'राजन' को उत्कृष्ट बाल साहितय सृजन व बाल कल्याण के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान के लिए १७ फरवरी ०६ को आयोजित बालकल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र के स्थापना दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि लक्ष्मीकांत वर्मा, संस्कृति मंत्री, ने स्मृति चिन्ह, प्रशस्ती पत्र, अंग वस्त्र, श्रीफल एवं पंच फल प्रदान का 'यशवंत सिंह स्मृति बाल साहित्यकार' पुरस्कार प्रदान किया गया. इस अवसर पर राजन के लोकप्रिय बाल कहानी संग्रह सबसे अच्छा उपहार के पंजाबी संस्करण सभ तों चचंगा तोहफा का लोकार्पण भी किया गया.

श्याम मोहन दुबे की कृति शंकराचार्य को समर्पित

जबलपुर, विगत दिवस परमहंस गंगा आश्रम ज्योतेश्वर के नवनिर्मित द्विपीठाधीश्वर जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरुपानन्द जी महाराज की तपोभूमि 'मणिद्वीप में नगर व प्रदेश के वरिष्ठ साहित्यकार पं० श्याम मोहन दुबे ने अपनी चर्चित द्वितीय कृति राग रंग व्यंग्य के संग पूज्य महाराज श्री ओ अपनी पत्नी श्रीमती माया दुबे के साथ पूजन अर्चन कर समर्पित की.

आकाक्षां यादव को काव्य कुमुद सम्मान

कानपुर की चर्चित साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था अभिव्यंजना द्वारा युवा कवयित्री एवं साहित्यकार श्रीमती आकाक्षा यादव को हिन्दी साहित्य में सृजनात्मक योगदान एवं काव्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा के लिए काव्य कुमुद की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया.

कवयित्री कृष्णा कुमारी को किशोर भारती सम्मान

कवयित्री कृष्णा कुमारी को प्रगतिशील लेखक संघ, कोटा द्वारा उनकी उल्लेखनीय साहित्यिक सेवाओं के लिए 'प्रथम किशोर भारती सम्मान', प्रदान किया गया है.कार्यक्रम संयोजक वयोवृद्ध पत्रकार श्री अजित मधुकर, संजय अग्रवाल, अखिलेश अंजुम एवं मुख्य अतिथि जननायक के संपादक प्रद्युम्न शर्मा ने इन्हें शॉल, श्रीफलस एवं नकद राशि भेंट की.

स्वास्थ्य

गर्मी से राहत पाने के लिए आयुर्वेद अपनायें

भीषण गर्मी से राहत पाने के लिए लोग पेप्सी, कोकोकोला, लस्सी, मलाई तथा तरह-तरह के ड्रिंक्स पदार्थ प्रयोग करते हैं जिसका सीधा प्रभाव हमारे लीवर और स्नायु पर पड़ता है. जहां हमें तत्काल राहत मालूम होती है वहीं पर तरह-तरह की बीमारियां हमें घेर लेती है. थोड़ी सी गर्मी की राहत में हम अपना जहाँ पैसा बर्बाद करते हैं वही स्वास्थ्य को भी सूक्ष्म रोगाणुओं के हवाले कर देते है. अधिकांश पेय पदार्थ घातक केमिकलों से युक्त होते हैं. डिब्बा बन्द कई पदार्थ हमारे स्वास्थ्य के दुश्मन होते है, हमें इनसे बचना चाहिए.

जौ, चना का सत्तू पानी में घोलकर पुदीना व भुना जीरा एवं काला नमक मिलाकर लस्सी की भाँति खूब फेंटकर सुबह-शाम नियमित पीने से जहां हमें गर्मी में राहत मिलेगी वही पर गैस, कब्ज, पेशाब की जलन, घबराहट, लू से हमें राहत मिलेगी. भोजन व नास्ते में प्याज, पुदीना, नीबू, बिना छिली हुई कच्ची लौकी का रस बिना छिलका उतारे हमें नियमित रुप से प्रयोग करना चाहिए. चौराई, भिण्डी, नेनुआ, मूली, करैला, तरबूजा, खरबूजा, ककड़ी, खीरा, फालसा, जामुन, दही, मठ्ठा हमें अधिक प्रयोग करना चाहिए.

गर्मी आते ही ठेलों पर बेल का शर्बत, आम का जूस, गन्ने का रस, लाल पीला, हरा कलर में बर्फ का शर्बत बिकने लगता है और तरह-तरह विदेशी कम्पनियों के डिब्बा बन्द अथवा बोतलों में पैक जो पेय पदार्थ हमें सड़को, बाजारों, फुटपाथों पर मिलते है यह सब स्वास्थ्य के लिए घातक है. हमें इनसे बचना चाहिए खास कर बच्चों पर निगाह रखना चाहिए कि इनका प्रयोग न करने पायें. ग्रीष्म ऋतु सम्बन्धित तमाम बीमारियॅा का सरल उपचार व गर्मी से राहत दिलाने का एक स्वदेशी फार्मूला काफी सरल व सस्ता है. प्रत्येक घर परिवार में इसका निर्माण करके यदि तीन माह तक पूरा परिवार सुबह-सुबह ठंडई की भांति इसका प्रयोग करता है तो गर्मी से राहत दिलाने वाले विश्व के सारे फार्मूला का एक शानदार व पूर्ण निरापद आयुर्वेदिक फार्मूला होगा, जिसका हजारों बार प्रयोग करके सफल देखा गया है.

फार्मूला-खीरा का बीज, ककड़ी का बीज, गुलवनस्पा, सतावर नम्बर १, असगंध नौगारी, सूखी वेल का गूदा, गोखरु छोटा, सूखी धनिया, सेवती का फूल, गूलाब के फूल, काहु के बीज, कुल्फा के बीज, कासनी के बीज (सभी की २०-२० ग्राम मात्रा), खस १० ग्राम, सफेद चन्दन १ ग्राम, कमल गट्टा का बीज छिलका रहित २० ग्राम, सौफ २० ग्राम, काली मिर्च १० ग्राम, सफेद मिर्च १० ग्राम, जीरा १० ग्राम, छोटी इलायची १० ग्राम, ब्राम्हीबूटी २० ग्राम, मीठी वच १० ग्राम, अर्जुन वृक्ष की छाल १० ग्राम, पीपल की छाल १० ग्राम, पीपल का फल १० ग्राम, बरगद का फल १० ग्राम, गूलर की छाल १० ग्राम, सूखा आंवला २० ग्राम.

निर्माण विधी- इन सभी वस्तुओं को साफ करके सुखा लें और इसे कूट लें. यह पाउडर न बनने पावे. इस पर ध्यान रखें किन्तु सभी दरदरा जव कुट (जौ कुट) बन जाय. इसको छानना नही है. इसे सुरक्षित डिब्बे में रख लें. युवा व्यक्ति के लिए इसकी मात्र १० ग्राम सुबह-शाम की है. रात को मिट्टी की हड़ियां में १० ग्राम युवको व ५ ग्राम बच्चों बड़े बच्चों की मात्रा की दर से जितने परिवार हों उतनी मात्रा में भिगो दें. पानी उतना ही डालें जितने में भॅली-भॅाति फूल जायें. प्रातःकाल इसे हाथ से खूब मलें और कपड़े से छान लें.

वैद्यराज गंगाधर द्विवेदी, जौनपुर, उ.प्र.

सेवन विधि व मात्राः एक गिलास व आधी गिलास प्रति छोटे-बड़े के हिसाब से पानी में छने हुए रस को घोल लें. बीस ग्राम मिश्री प्रति व्यक्ति के हिसाब से मिला दें और असली गुलाब जल की कुछ मात्र इस शर्बत में मिलाकर प्रत्येक व्यक्ति को खाली पेट प्रातःकाल नियमित रुप से प्रति व्यक्ति ६० दिन इसका प्रयोग सुबह-शाम करें. ध्यान रे कि प्रातः काल पुनः इसी प्रकार मिट्टी की हड़िया में सायंकाल के लिए भी भिगो दिया करें.

प्रति व्यक्ति के हिसाब से भिगोते समय एक बादाम कुचलकर मिश्रण में मिला देने से यह बहुत उपयोगी दिल-दिमाग के लिए पौष्टिक ब्रेन टॅानिक के रुप में सिद्ध होगा.

उपचार- सिर का चकराना, चक्कर आना, सर दर्द, दिल की धड़कन, याददास्त की कमी, गर्मी की बेचैनी से जी घबराना, बिना बुखार के ही पूरा शरीर तपना, हाथ पैर के तलवों में जलन होना, ऑखों में जलन होना, पाखाना व पेशाब में जलन होना, चिन्ता व क्रोध में डूबे रहना, व्यर्थ का गुस्सा लगना, जबान का लड़खड़ाना, शरीर का कॉपना, स्नायुदौर्बल्य, स्वप्नदोष, सोते समय बुरा स्वप्न देखना, जी मचलाना, हैजा, आंव, पेचिस, पागलपन, मिर्गी जैसा दौरा, औरतो की मासिक धर्म की खराबी, लू का थपेड़ा लगना, शरीर पर दाने निकलना व खजुली व रक्त का दूषित हो जाना, गुर्दा, लीवर, हार्ट तथा मस्तिष्क की बीमारियों में इस फार्मूला का प्रयोग ईश्वरीय वरदान स्वरुप है.

कबड्डी का इतिहास

कबड्डी का खेल भारत का प्राचीनतम खेल है। इसका अनेक ग्रन्थों में खेले जाने का चित्रण मिलता है। विशुद्ध रूप से यह भारत का असली खेल है। कुश्ती के साथ-साथ कबड्डी का भी जिक्र मिलता है। कबड्डी भारत के ग्रामीण जन-जीवन का खेल है। इस खेल में किसी प्रकार की सामग्री एवं बड़े मैदान की आवश्यकता नहीं होती है जैसा कि अन्य विदेशी खेलों में पड़ती है। कबड्डी खेल जहां मनोरंजन के लिये एक सहज साधन है वही स्वास्थ्य की दृष्टि से एक अच्छा सरलतम व्यायाम भी है।आज इसने राष्ट्रीय स्तर से अन्तराष्ट्रीय खेलों में स्थान बना लिया है।

भारत के विभिन्न प्रदेशों में व विदेशी में यह खेल विभिन्न नामों से जाना जाता है। सामान्तया, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश व गुजरात के कुछ भागों में "हू-तू-तू" कठियावाड़ व कच्छ में "बाड़ी बाड़ी" तमिलनाडु, कर्नाटक में "चीड्डु-गुड" बंगाल में "डोन्डो", केरल में "बड़ी फसी", उत्तरी भारत में "कबड्डी", बंगलादेश में "डून्हू", श्रीलंका में "गुटथी चूव", इन्डोनेशिया में "कीचूव", नेपाल में "डून्हू" और मलेशिया में "चेडूगड" नाम से पुकारा जाता है।

यह खेल प्रारम्भ में तीन प्रकार से खेला जाता था।(१) संजीवनी (२) गामिनी (३) अमर भारतीय कबड्डी संघ में संजीवनी पद्धति कबड्डी का गठन किया गया, किन्तु इसके अन्य दो रूपों गामिनी व अमर पद्धति भी प्रचलित है। संजीवनी पद्धति में टीम का एक सदस्य विपक्षी टीम के पाले में जाकर छूकर आउट करने का प्रयास करता है या आउट करता है। प्रत्येक खिलाड़ी के आउट होने पर एक अंक प्राप्त होता है। सभी खिलाड़ियों के आउट होने पर टीम को दो अतिरिक्त अंक भी मिलते है। पूरे खेल का समय ४० मिनट का होता है। बीच में ५ मिनट का मध्यावकाश होता है। अगर पद्धति में कोई खिलाड़ी आउट नहीं होता है सिर्फ आउट होने की स्थिति में एक अंक दिया जाता है। इस खेल को आगे बढ़ाने का श्रेय महाराष्ट्र को जाता है। सन् १९३६ में पहली बार हनुमान व्यायाम प्रसारक मंडल अमरावती ने अपनी कबड्डी टीम को वर्लिन भेज कर प्रदर्शन किया, जिसकी काफी प्रशंसा की गयी, लेकिन कबड्डी राष्ट्रीय खेल के रूप में सन् १९५२ में ही गठित हुआ। सन् १९५३ में कबड्डी के नियम नामक पुस्तक प्रकाशित हुई।

इस समय कबड्डी का खेल भारत के अलावा अब पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका, मारिशस, वर्मा, दक्षिण कोरिया, चीन, मलेशिया, नेपाल, भूटान व जापान में काफी रूचि के साथ खेला जाने लगा है। अब इस खेल को पुरूष, महिला, बालक एवं बालिका सभी खेलते है। समय-समय पर कबड्डी के नियमों में परिवर्तन किया गया है। अब कबड्डी खेल में नीरसता समाप्त हो गयी है।

खेल के नियमःकबड्डी खेल निम्नलिखित नियमों के अन्तर्गत खेला जाता है।

(१)**मैदानः**मैदान का मतलब भूमि के उस क्षेत्र से है जो कि अच्छी तरह से समतल किया हुआ हो जो लकड़ी के बुरादे, गोबर का सड़ा हुआ खाद के मिश्रण से बनाया गया हो, मैदान समतल एवं नम होना चाहिये।

(अ)पुरूष व जूनियर बालक वर्ग = 12.50 X 50मी० मैदान

(१)जूनियर बालक वर्ग की आयु=18 वर्ष तक तथा निर्धारित सूचांक 250तक होना चाहिये (आयु की गणना वर्ष के अन्तिम दिन के आधार पर होगी।)

(ब)महिला, जूनियर बालिका, सब जूनियर बालक व सब जूनियर बालिका का मैदान (कोर्ट)11X 8 मी० का होगा।

(१)जूनियर बालिका वर्ग की आयु 16 वर्ष तक या इससे कम व निर्धारित सूचांक(Index)230 तक होना चाहिए। (आयु की गणना वर्ष के अन्तिम दिन के आधार पर होगी।)

(२) सब जूनियर बालक वर्ग की आयु 14 वर्ष तक या इससे कम व निर्धारित सूचांक(Index) 220 तक होनी चाहिए। (आयु की गणना वर्ष के अन्तिम दिन के आधार पर की जाती है।)

(३)सब जूनियर बालिका वर्ग की आयु १२ वर्ष तक या इससे कम व निर्धारित सूचांक(Index) 200 अंक तक होना चाहिये। (आयु की गणना वर्ष के अन्तिम दिन के आधार पर होगी।)

पत्रिका के सौवें प्रकाशन पर सभी पाठको को हार्दिक बधाई

जी०डी०मेहता

वरिष्ठ लेखक

१५८/३सी, इन्द्रपुरी, भोपाल, म.प्र. ४६२०२१

चिट्ठी आई है

प.पू.श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदीजी
श्री - श्रीमान के श्री चरणों में, सहर्ष कोटिशः सादर प्रणाम।
गो- गो गज बाज ज्ञान रत्न सुत वित्त, लोक प्रतिष्ठा दे प्रभु श्रीराम।
कु- कुल श्रेष्ठ है आपका, सपरिवार हो निरोग सवैभ आयुषमान।
ले- लेख लिख दो 'विश्व स्नेह समाज' मासिक पत्रिका बने महान
श्- शशि रवि रहे गगन में तब तलक हो यशयुक्त कीर्तिमान।
व- वसु आठ सम सेवा धारी बन, बढ़ाओं भारत मॉ की शान।
र-रंग रग में देशाभिमान समाये, करसे बरसे अविरल दान।
कु०-कुटुम्ब परिवार समाज राष्ट्र विश्व का करे समुचित सदा उत्थान।
द्वि-द्विज बनादो सबको यज्ञी जीवन जिये सभी जगति भर के बन`आर्य।
वे-वेशकीमती मार्ग दर्शन उक्त पत्रिका से देकर सदा कर नेक कार्य।
दी-दीपावली की हार्दिक शुभकामना, समस्त पाठकों सहित आपको हो स्वीकार
जी-जीवन धन्य सार्थक बने आपका, सुख समृद्धि का सदा हों सुन्दर भण्डार।
विश्व स्नेह समाज पत्रिका अनूठी, बेजोड़, दिव्य, सारगर्वित, सराहनीय, संग्रहलायक, धर्म निरपेक्ष, सबका मंगल सोचने वाली, भावी पीढि के उत्थान एवं नई दिशा`देने वाली आध यात्म से परिवार राष्ट्रीय सामाजिक चेतना देने वाली एक मात्र पत्रिका है आपके कुशल सम्पादन को श्रेय है.
सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी, बुरहानपुर, म.प्र. ४५०३३१
++++++++++++++++++++++++++++++++++

बधाई एवं शुभकामना प्रेषित

अक्टूबर का अंक मिला. यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके कठिन श्रम एवं समर्पण के कारण यह पत्रिका तमाम बाधाओं का सीना चीरती हुई अपना सौवॉ अंक फरवरी ०६ में लेकर आ रही है. इसके लिए मैं आपको बधाई एवं शुभकामना प्रेषित करता हूँ.
विश्व स्नेह समाज की ग्राहयता का सबसे बड़ा कारण यह है कि इतने कम पृष्ठों में ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म, मनोरंजन, एव`साहित्य समावेश अन्य पत्रिकाओं में देखने को मिलता नहीं.
इस अंक में प्रकाशित गीत, गजल, लेख कहॅानिया, पसंद आयी. 'आपकीबात' पढ़ने पर अपने अंतर में मैंने एक अदृश्य प्रेरणा का संचार पाया. निश्चित ही इससे आमजन भी प्रेरित होगा.

अजय चतुर्वेदी 'कक्का', सोनभद्र, उ०प्र०
++++++++++++++++++++++++++++++++++
पत्रिका मिली. जिसमें बहुत सारी ज्ञानबर्द्धक सामग्री पढ़ने को मिली. साहित्यकारों का मान एवं सम्मान बढ़ाने के लिए आपके विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा अनेको पुरस्कार देकर आप साहित्यकारों को सम्मानित कर रहे हैं. इसके लिए आपको धन्यबाद. इस तरह से आप राष्ट्रीय स्तर पर कवि, रचनाकार, लेखक साहित्यकारों के लिए उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं. हिन्दी पत्रकारिता उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़े धन्यबाद.

भैरु लाल नामा,बाडमेर, राजस्थान
++++++++++++++++++++++++++++++++++
पत्रिका विश्व स्नेह समाज के लिये पाठक के विचार लयबद्ध, सम्पादक का प्रयास पूर्णतया प्रशंसनीय है.
लेखनी चली,
विभिन्न-२
विचार आपके व हमारे थे
कुछ भिन्न-२
फिर भी कविता, कहॅानी, लेख के भीतर
शब्द कुछ और अर्थ
होते हैं भिन्न-२
प्रतीकों से कहीं
यह सजी हुई
कहीं पर और प्रकार की
ध्वनि हुई
बादल घटाएं
परिवर्तित मौसम
जीवन की कहानी में छिपी हुई
रिमझिम वर्षा, झिल मिल तारे
प्रकृति के खेल में
मन में आशा निराशा जगी हुयी
राजेन्द्र ग्रोवर, छावनी, हरियाणा
++++++++++++++++++++++++++++++++++
राग रंग की नव तरंग में मॉ की याद भुलाते आये।
भूल गये अपने वैभव को यश औरों का गाते आये।
अपनी भाषा में भारत फिर से विश्व गुरु हो यह संकल्प हमारा है
जिस राष्ट्र में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जाये।
कर्मवीर सिंह, गाजियाबाद, उ०प्र०

लघु कथाएं

पी0आर0वासुदेवन 'शेष', चेन्नई, तमिलनाडु की लघुकथाए

पाप का घड़ा

सेठ बनवारीलाल सूरत शहर के नामी गिरामी व्यक्तियों में से थे. लेकिन उन्होंने कभी भी अपने जीवन में पुण्य का काम नहीं किया. उसने अपने कारखाने, मिल और कम्पनी में काम करने वाले हर व्यक्ति का हर तरह से शोषण किया. उन्हें पुण्य क्या होता है, अच्छे हैं, इसकी परिभाषा मालूम नहीं थी. उसे विरासत में पुरखें की कमाई काली दौलत मिली जिसका उसने फायदा उठाया और आगे भी उसने असहायों पर शोषण का काम जारी रखा. उसकी इकलौती बेटी निशा अब विवाह के लायक हो गई. उसने उसके लिए योग्य वर की तलाश शुरु कर दी और आखिरकार उसे सेठ विश्वनाथ के बेटे संदीप के रुप में दामाद मिल गया. निशा की शादी बनवारीलाल ने बड़े धूमधाम से की. गरीबों की कमाई का पैसा पानी की तरह बहाया. निशा और संदीप विवाह के बाद हनीमून के लिए कश्मीर गए. वहाँ दोनों ने बड़ी हँसी खुशी से अपना हनीमून मनाया. गुलमार्ग, पहलगांव, डलझील, श्रीनगर देखा ओर हनीमून मनाने के बाद, वह सूरत जाने के लिए लौट रहे थे कि आतंकवादियों ने उन्हें अपनी गोलियों का निशाना बना दिया. नवदम्पति की लाशें ही सूरत पहुँची. अपनी बेटी और दामाद की लाश को छिन्न-भिन्न देखकर बनवारी लाल के होश उड़ गये. एकत्रित भीड़ में से किसी का स्वर स्पष्ट सुनायी दे रहा था कि सेठ ने कितने लोगों का दिल दुखाया है. इसके पाप का घड़ा भर गया है. भगवान ने इसे कर्मो की कड़ी सजा दी है. सेठ बनवारी लाल को लोगों के ये शब्द किसीस तीखी छुरी के समान चुभ रहे थे.

::

भेड़िए

अंजना विधवा स्त्री थी. वह रुपवती और गुणवती थी. उसके दुख का कारण उसके अल्प आयु में ही विधवा हो जाना था. समय के कालचक्र ने उसके पति मोहित को सड़क दुर्घटना में छीन लिया था.

अंजना अपने सुहाग को खो जाने के बाद गृह क्लेशों से तंग आकर आत्महत्या का निश्चय कर, आधी रात को अपने घर से निकल पड़ी. उसकी इस हरकत को देखकर उसका देवर मोहन उसे टोकता है. आधी रात को कहाँ जा रही हो भाभी? वहाँ घना जंगल है और सुना है जंगली जानवर भी हैं.

मुझे किसी जंगली जानवर से डर नहीं लगता देवर जी, क्योंकि मैं जंगली जानवर में केवल भेड़िए का शिकारा हूँ. मेरे खासकर घर-बाहर और जंगल एक जैसा है.

आप यह क्या कह रही हैं, भाभी? देवर मोहन ने रोष से पूछा. भेड़िए जंगल में होते हे यह सुना था किन्तु आजकल घर में पालतू भेड़िए और शहर में शहरी भेड़िए होते हैं.

भाभी का उत्तर सुन, वह पानी पानी हो गया.

ज्वेल ऑफ इंडिया अवार्ड ०६ के लिये प्रस्ताव आमंत्रित

विविध क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों को राष्ट्र स्तरीय ज्वेल ऑफ इडिया अवार्ड ०६, नोबल इंडिया अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा. यह अवार्ड कवि, गीतकार, गायक, निर्देशक, फिल्मकार, लेखक, कलाकार, सामाजिक, राजकीय, धार्मिक, वैद्यकीय, कृषि, सांस्कृतिक, औद्योगिक, खेल, कला, वाणिज्य तथा अन्य किसी भी क्षेत्र में कार्य करने वालों को गोल्ड मेडल, प्रदान किया जाएगा. पुरस्कार के लिए अखबारों/पत्र-पत्रिकाओं में छपे समाचार की छायाप्रति, अपना पूरा नाम, छायाचित्र,फोन नं. के साथ भेजना आवश्यक है. व्यक्ति एवं संस्था इस अवार्ड के लिये आवेदन कर सकती है. यह सम्मान वर्धा में प्रदान किये जाएगें. विस्तृत जानकारी भेजें:

युवा समूह प्रकाशन,
शिवाजी चौक, वर्धा-४४२००१, महाराष्ट्र

पुस्तक पुरस्कार आयडियल स्पर्धा का आयोजन

राष्ट्र स्तरीय पुस्तक आयडियल स्पर्धा पुरस्कार का भव्य आयोजन किया गया है. जिसमें हिंदी, मराठी, अंग्रेजी, राजस्थानी या हिंदी भाषा से जुड़े देश की कोई भी अन्य भाषी पुस्तक एवं पत्रिका की दो-दो प्रतियां स्वीकार की जायेगी. रचनाकार, कवि, लेखक संपादक, प्रकाशक सभी के लिए स्पर्धा खुली है.

प्राप्त कृतियॉ पुरस्कार घोशणा के बाद सार्वजनिक पुस्तकालयों, साहित्यकारों को भेट की जाएगी. पुस्तकों की दो प्रतियां प्रविष्टी के साथ अल्प परिचय, फोटो के साथ अग्रवाल पुस्तक भण्डार आयउियल स्पर्धा २००६,

युवा समूह प्रकाशन,
शिवाजी चौक, वर्धा-४४२००१, महाराष्ट्र

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नामः हँसोगे तो फँसोगे
रचनाकारः रामसहाय वर्मा
कीमतः५० रुपये
प्रकाशकः मकरंद प्रकाशन, बी-१४, सेक्टर-१५, नोएडा-२०१३०१

हास्य व्यंग्य की रचनाओं से सराबोर प्रस्तुत संग्रह हँसोगे तो फँसोगें में मुहावरों का भरपूर प्रयोग किया गया जिससे इस संग्रह की ललकता थोड़ी और बढ़ जाती है. लेखक ने ऐसी समस्याओं को अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से उठाया है जो कहीं न कहीं आम आदमी के अंतर्मन को छूती है. मच्छरों के आतंक से कौन त्रस्त नहीं है. 'मच्छरों के आतंक पर लेखक बड़े ही सलीके प्रस्तुत किया है. यद्यपि जूते पर काफी लेखकों ने अपनी कलम चलायी है लेकिन प्रस्तुत संग्रह का प्रथम आलेख ऊँ जूताय नमः कुछ अलग ढंग से प्रस्तुत किया गया है. इसके अतिरिक्त भ्रष्टाचारी महासंघ, एक सरकारी कार्यालय, साठा सो पाठा, दे दाता के नाम, दिल्ली की बस सेवा, काश! चुनाव लड़ जाता अच्छी बन पड़ी है. लेखक को सुंदर लेखनी के लिए बधाई।

प्राप्त पुस्तकें

पुस्तक का नामः रास्ते और उनके मोड़
रचनाकारः पंडित नरेश कुमार शर्मा
कीमतः५१ रुपये
सम्पर्कः सी-८०३, सेटेलाइट पार्क गुफा मार्ग, जोगेश्वरी(पूर्व), मुंबई-४०००६०
++++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः फिर कब आओगी
रचनाकारः साहित्य श्री ओम प्रकाश अवस्थी
कीमतः१७५ रुपये
सम्पर्कः १४६, हनुमान कॉलोनी, सूफीपूरा, बहराइच-२७१८०१, उ०प्र०
++++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः माद्री
रचनाकारः डॉ० तेजनारायण कुशवाहा
कीमतः२५ रुपये
सम्पर्कः 'निलयम्', गांधी नगर, ईशीपुर, भागलपुर-०६,बिहार
++++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः हरसिंगार तले साधना
रचनाकारः महेन्द्र चन्द्र राय
कीमतः१०० रुपये
सम्पर्कः पं. ब्रजभूषण मिश्र ग्रामवासी-कृपाली स्मृति संस्थान ३, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
++++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः संस्मरण पर भरोसा...व्यंग का परोसा
रचनाकारः बलराम शर्मा 'विप्र'
सम्पर्कः टाईप-बी, सेक्टर-७, क्वाटर नं. ३०७, बालको नगर, कोरबा, छ.ग.

लघु कथा संग्रहः भूकम्प
लेखकः राम सहाय बरैया
पताः ३५, पंचशील नगर, मेला ग्राउण्ड, आर.के. पुरी, ग्वालियर, म.प्र.-४७४०११
मूल्यः २५ रुपये

करीब ६६ क्षणिकाओं यह संग्रह साज सज्जा, व आवरण से काफी सुंदर है. रचनाकार इन क्षणिकाओं के माध्यम से सामाजिक समस्याओं को छूने का भरपूर प्रयास किया है. रचनाकार इनमें सफल भी है. आज के समयाभाव काल में ये क्षणिकाएं खण्ड काव्य, कविताओं के बदले ज्यादे सहज प्रतीत होती है आम आदमी तक पहूँचने के लिए. यद्यपि यह अपने तरह क्षणिकाओं पहला संग्रह हैं.
कुछ रचनाएं देखिए-देश की एकता और अखण्डता हेतु सद्भावना के बीज बोएं।तथा मतभेद के मैल को/प्रेम के साबुन से धोएं.
++++++++++++++++++++++++++++++++++
आजकल/प्रजातंत्र में प्रत्याशी को/योग्यता से नहीं
पार्टी फण्ड के योगदान से/तौला जाता है।/इसके बाद ही
चुनाव में/उसके पक्ष में/विजयी नारा/बोला जाता है।

वे/ चुनाव रूपी गंगा/नहाने जा रहे है।/इसलिये-
नये-नये नारे/ला रहे हैं।

नेता जी,/अपने क्षेत्र में/पोस्टर, बैनर जुलूस के साथ
दौड़ रहे हैं।/पॉच साल बाद/ आये हैं, इसलिए
हाथ जोड़ रहे है।

चुनाव में/वही नेता रहता है/अब्बल।
जो वोटर को बांटता है/दारू, मुर्गा कम्बल।
रचनाकार को इस सुदंर लेखनी के लिए हार्दिक बधाई. आशा है आगे भी इस तरह के और सफल प्रयास जारी रखने की हिम्मत करते रहेगें।

प्राप्त पुस्तकें

पुस्तक का नामः अंतर्द्वंद

रचनाकारः देवेन्द्र कुमार मिश्रा

कीमतः ४०० रुपये

प्राप्ति स्थलः मेघ प्रकाशन, २३६, दरीबाकलां, दिल्ली-११०००६

++++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः बदलते रंग

लेखकः देवेन्द्र कुमार मिश्रा

कीमतः१२५ रुपये

सम्पर्कःजैन हार्ट क्लीनिक के सामने, परासिया रोड, छिदवाड़ा-४८०००१, म०प्र०

++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः हथेली पर कविता

रचनाकारः डॉ० मृदुला झा

कीमतः१५० रुपये

सम्पर्कः बेलन बाजार, मुंगेर-८११२०१, बिहार

प्रस्तुत काव्य संग्रह हथेली पर कविता में कुल ६१ कविताएं संकलित हैं. इसमें मानवीय संवेदनाओं की विविध पहलुओं को अनोख तरीखे वर्णित किया है. प्रथम कविता कैसे भूलूॅ में कवियित्री ने प्रेमिल अंतर्भाव को अभिव्यक्त किया है देखिए-

जीवन के उन मधुर पलों की, यादों को मैं कैसे भूलूॅ।
अनजाने में हम टकराये, मैं शरमायी तुम घबराये
उन बीती मीठी यादों को, तुम्हीं बताओं कैसे भूलूॅ।।

बिछुड़े हुए 'हमसफर' को याद करते हुए-

गीत की महफिल लगी है, प्यार की घंटी बजी है
हमसफर बिन जिंदगी अब, बोझ-सी लगने लगी है।

कवयित्रि इसी कविता में मर्मस्पशी पंक्तियां देखिए-

गम की काली रात देखो, तमस को उकसा रही है
आ भी जा मेरे सजन अब, प्रिया दस्तक दे रही है

'कविता' शीर्षक के अंतर्गत कवियित्री ने एक कविता क्या है को बखूबी दर्शाया है-

जीवन के मधु-कटु को हर पल, हॅसकर गले लगाती कविता।
मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारे में, नित अरदास लगाती कविता।
भूले-भटके राही को भी, सुन्दर मार्ग दिखाती कविता।
तूफानों में राह बनाकर, चलना भी सिखलाती कविता।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि कवियित्रि ने बहुत सी सुन्दर कलम चलायी है. इस संग्रह की लगभग सभी कविताएं अच्छी है. कवियित्री का यह प्रयास सराहनीय व स्वागत योग्य है.

हिन्दी उदय सम्मान हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान ने वर्ष ०६ से प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/ स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है. इसमें प्रतिभागी को अंक पत्र, नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष / मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित प्रति के साथ **३० दिसम्बर २००६ तक** भेजना होगा. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/ विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में **हिन्दी उदय सम्मान** व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी. अपना आवेदन निम्न पते पर भेजें:

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

email: sahityaseva@rediffmail.com

Mo.: (O) 09335155949

Reco. By. U.P.Government

With Complement From :

Kishore Girls Inter College & Convent School

Nursery to Class XIIth

Addmission Open

- Education by experienced Teachers
- Good Atomosphere For Education
- Limited Students in every Class

Manager
V.N.Sahu

Cont.: 82/102, Meera Patti, T.P. Nagar, G.T. Road, Allahabad

विश्व स्नेह समाज पत्रिका के सौवें प्रकाशन पर स्नेही पाठको को हार्दिक बधाई

जिला अपराध निरोधक समिति

१५, लीडर रोड, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

महेन्द्र कुमार अग्रवाल

संगठन मंत्री

रामनाथ एडवोकेट

जिला सचिव

साहित्य मेला:१० हेतु प्रविष्टियॉ आमंत्रित है

साहित्य जगत में अत्यधिक लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित व अर्न्तराष्ट्रीय जगत में भी चर्चा की ओर अग्रसित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिककारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्न सम्मान प्रस्तावित है-

साहित्य श्री, डॉ.रामकुमार वर्मा सम्मान, बाल श्री सम्मान, कैलाश गौतम सम्मान, डॉ.किशोरी लाल सम्मान, प्रवासी भारतीय सम्मान, अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सेवी सम्मान, राजभाषा सम्मान,सम्पादक श्री, विधि श्री, डॉक्टरश्री, सैनिक श्री, विज्ञान श्री, प्रशासक श्री, कलाकार श्री, सांस्कृतिक विरासत सम्मान, बाल साहित्यकार सम्मान, पुलिस हिंदी सेवा पदक, युवा पत्रकारिता सम्मान, राष्ट्रभाषा सम्मान, युवा कहॉनीकार सम्मान, युवा व्यंग्यकार सम्मान, युवा कवि सम्मान, विहिसा अलंकरण, दोहाश्री, गज़ल श्री, राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान, राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान आदि प्रदान किएं जाएंगे. संस्थान द्वारा इस वर्ष से निम्न मानद उपाधियां भी प्रस्तावित है-हिन्दी रत्न, हिन्दी भाषा रत्न, हिन्दी गौरव, हिन्दी भाषा गौरव, हिन्दी श्री, हिन्दी भाषा श्री, पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें, रचनाएं लौटायी नहीं जाएगी. ये पुरस्कार इलाहाबाद में गरिमापूर्ण साहित्यिक समारोह में प्रदान किये जायेंगे.

विशेषः १.विस्तृत जानकारी के लिए टिकट लगा जबाबी लिफाफा भेजें अथवा ईमेल करें. २.मानद उपाधियों का निर्धारण मांगी गयी जानकारी के आधार पर किया जाएगा. ३. यह जरुरी नहीं है प्रत्येक वर्ष सभी उपाधियां दी ही जाए. उपाधियां तभी दी जाएगी जब प्राप्त प्रविष्ट्यिां मानक के अनुकूल होगी. इसकी कोई बाध्यता नहीं होगी.

आवेदन प्रपत्र मंगाने की अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २००९

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

साहित्य मेला:१० हेतु प्रविष्टियॉ आमंत्रित है

साहित्य जगत में अत्यधिक लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित व अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी चर्चा की ओर अग्रसित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिककारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्न सम्मान प्रस्तावित है-साहित्य श्री, डॉ.रामकुमार वर्मा सम्मान, बाल श्री सम्मान, कैलाश गौतम सम्मान, डॉ.किशोरी लाल सम्मान, प्रवासी भारतीय सम्मान, अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सेवी सम्मान, राजभाषा सम्मान,सम्पादक श्री, विधि श्री, डॉक्टरश्री, सैनिक श्री, विज्ञान श्री, प्रशासक श्री, कलाकार श्री, सांस्कृतिक विरासत सम्मान, बाल साहित्यकार सम्मान, पुलिस हिंदी सेवा पदक, युवा पत्रकारिता सम्मान, राष्ट्रभाषा सम्मान, युवा कहॉनीकार सम्मान, युवा व्यंग्यकार सम्मान, युवा कवि सम्मान, विहिसा अलंकरण, दोहाश्री, ग़ज़ल श्री, राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान, राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान आदि प्रदान किएं जाएंगे. इस वर्ष से निम्न मानद उपाधियां प्रस्तावित है-हिन्दी रत्न, हिन्दी भाषा रत्न, हिन्दी गौरव, हिन्दी भाषा गौरव, हिन्दी श्री, हिन्दी भाषा श्री.

पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें, रचनाएं लौटायी नहीं जाएगी. ये पुरस्कार इलाहाबाद में गरिमापूर्ण साहित्यिक समारोह में प्रदान किये जायेंगे.

विशेषः १.विस्तृत जानकारी के लिए टिकट लगा जबाबी लिफाफा भेजें अथवा ईमेल करें. २.मानद उपाधियों का निर्धारण मांगी गयी जानकारी के आधार पर किया जाएगा. ३. यह जरुरी नहीं है प्रत्येक वर्ष सभी उपाधियां दी ही जाए. उपाधियां तभी दी जाएगी जब प्राप्त प्रविष्ट्यिां मानक के अनुकूल होगी. इसकी कोई बाध्यता नहीं होगी.

आवेदन प्रपत्र मंगाने की अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २००६

प्रसार सचिव

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011

इमेलः sahityaseva@rediffmail.com

कार्यशालाएं आयोजित

१.हिन्दी लेखन कार्यशालाः (ग़ज़ल, कविता, आलेख, संस्मरण, उपन्यास, नाटक आदि, दिनांकः३.०५.०६ से १० मई २००६ तक तथा १५ जून २००६ से ३० जून २००६ तक)

२.पत्रकारिता कार्यशालाः (दिनांकः०१.०६.०६ से १५.०६.०६ तक)

३.पेंटिग कार्यशालाः (दिनांकः ११ मई २००६ से १७ मई २००६ तक)

४.कुकिंग/बेकिंग कार्यशालाः (दिनांकः १७ मई २००६ से २४ मई २००६ तक)

५.कम्प्यूटर हिन्दी टंकण कार्यशालाः (दिनांकः ०१ मई०६ से १५ मई ०६, १ जून ०६ से १५ जून०६ तक)

६.शार्ट हैंड कार्यशालाः दिनांक १५ मई ०६ से २२ मई ०६,

७. कम्प्यूटर कार्यशालाः १ जून १००६ से ३० जून २००६ तक

सभी कार्यशालाएं इलाहाबाद में आयोजित की जाएगी. विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः

प्रसार सचिव

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com, Mo.: 09335155949

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93,नीम सराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया. **डाक पंजीयन संख्याः** एडी.306/2006–08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380 **संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी